PRGI No. GUJHIN/2011/39228

गरवी गुजरात

PUBLISHED HINDI DAILY FROM AHMEDABAD

वर्ष : 16
अंक : 052
दि. 21.06.2026,
रविवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

थाली-चम्मच के शोर से गूंजा जंतर-मंतर, छात्रों के भविष्य को लेकर सरकार पर बरसे प्रदर्शनकारी

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली के जंतर-मंतर पर शनिवार को एक ऐसा विरोध प्रदर्शन देखने को मिला जिसने न सिर्फ राहगीरों का ध्यान खींचा, बल्कि सोशल मीडिया से लेकर राजनीतिक गलियारों तक नई बहस छेड़ दी। एक हाथ में थाली, दूसरे हाथ में चम्मच और जुबान पर लगातार गूंजता नारा—"गो धर्मेंद्र प्रधान गो"। दूर से देखने पर यह दृश्य कई लोगों को कोरोना काल की याद दिला रहा था, जब पूरे देश में लोगों से घरों की बालकनी और छतों पर खड़े होकर थाली और चम्मच बजाने की अपील की गई थी। फर्क सिर्फ इतना था कि इस बार निशाने पर कोरोना वायरस नहीं, बल्कि परीक्षा प्रणाली में कथित अनियमितताओं और छात्रों के भविष्य से जुड़े सवाल थे।

जंतर-मंतर पर जुटी भीड़ का नेतृत्व युवा संगठन कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) कर रही थी। संगठन के संस्थापक अभिजीत दीपके के आह्वान पर देश के विभिन्न हिस्सों से छात्र, प्रतियोगी परीक्षा अभ्यर्थी और उनके समर्थक यहां पहुंचे थे। प्रदर्शनकारियों का आरोप था कि पिछले कुछ वर्षों में लगातार सामने आए पेपर लीक, परीक्षा में गड़बड़ियां, परिणामों में देरी और भर्ती प्रक्रियाओं में अनिश्चितता ने लाखों युवाओं के भविष्य को संकट में डाल दिया है। उनका कहना था कि वर्षों की मेहनत और तैयारी के बावजूद छात्र बार-बार ऐसी परिस्थितियों का सामना कर रहे हैं, जिन पर उनकी कोई जिम्मेदारी नहीं होती, लेकिन नुकसान उन्हें ही उठाना पड़ता है।

प्रदर्शन की सबसे खास बात उसका तरीका था। पारंपरिक नारों और भाषणों के बजाय प्रदर्शनकारियों ने थाली और चम्मच बजाकर अपना विरोध दर्ज कराया। जैसे ही अभिजीत दीपके मंच पर पहुंचे, पूरे इलाके में बर्तनों की आवाज गूंजने लगी। प्रदर्शनकारियों का कहना था कि यह प्रतीकात्मक विरोध है, जिसके माध्यम से वे सरकार का ध्यान छात्रों की समस्याओं की ओर आकर्षित करना चाहते हैं। उनका तर्क था कि यदि कभी देश को एकजुट करने के लिए थाली-चम्मच का इस्तेमाल किया जा सकता है, तो छात्रों की आवाज उठाने के लिए भी इसी तरीके को अपनाया जा सकता है।

जंतर-मंतर का पूरा इलाका घंटों तक नारों और बर्तनों की आवाज से गूंजता रहा। प्रदर्शनकारियों के हाथों में विभिन्न प्रकार की तख्तियां थीं, जिन पर परीक्षा प्रणाली में सुधार, पेपर लीक पर रोक और जिम्मेदार अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग लिखी गई थी। कई छात्र ऐसे भी थे जो वर्षों से प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे हैं और बार-बार होने वाली गड़बड़ियों से खुद को ठगा हुआ महसूस कर रहे हैं। उनका कहना था कि जब कोई परीक्षा रद्द होती है या उसका प्रश्नपत्र लीक हो जाता है, तो सिर्फ एक परीक्षा नहीं रुकती, बल्कि लाखों युवाओं के सपने और योजनाएं भी प्रभावित होती हैं।

कॉकरोच जनता पार्टी के संस्थापक अभिजीत दीपके ने प्रदर्शन के दौरान कहा कि यह आंदोलन किसी एक परीक्षा या एक भर्ती प्रक्रिया तक सीमित नहीं है। यह उन सभी छात्रों की आवाज है जो व्यवस्था में पारदर्शिता और जवाबदेही चाहते हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि बार-बार सामने आने वाली घटनाओं के बावजूद जिम्मेदारी तय नहीं की जाती और न ही दोषियों को ऐसी सजा मिलती है जो भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोक सके। उनका कहना था कि जब तक परीक्षा प्रणाली पूरी तरह पारदर्शी और भरोसेमंद नहीं बनेगी, तब तक युवाओं का विश्वास बहाल नहीं हो पाएगा।

इस प्रदर्शन से पहले अभिजीत दीपके ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को एक खुला पत्र भी लिखा था। पत्र में उन्होंने छात्रों की समस्याओं का उल्लेख करते हुए परीक्षा प्रबंधन और भर्ती प्रक्रियाओं में सुधार की मांग की थी। साथ ही उन्होंने उन मामलों में जवाबदेही तय करने की आवश्यकता पर जोर दिया था, जिनमें कथित रूप से परीक्षा संबंधी अनियमितताओं के आरोप लगे हैं। सीजेपी लगातार केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की मांग भी उठा रही है और प्रदर्शन के दौरान यह मांग प्रमुख रूप से सुनाई दी।

जंतर-मंतर पर आयोजित यह प्रदर्शन संगठन का दूसरा बड़ा आंदोलन माना जा रहा है। इससे पहले भी सीजेपी ने परीक्षा प्रणाली से जुड़े मुद्दों को लेकर विरोध प्रदर्शन किया था। संगठन का दावा है कि लाखों छात्रों की समस्याओं को पर्याप्त महत्व नहीं दिया जा रहा है और यही कारण है कि युवाओं में निराशा बढ़ रही है। प्रदर्शनकारियों का कहना था कि सरकार को यह समझना होगा कि प्रतियोगी परीक्षाएं केवल एक प्रशासनिक प्रक्रिया नहीं हैं, बल्कि करोड़ों परिवारों की उम्मीदों और भविष्य से जुड़ा विषय हैं।

प्रदर्शन के दौरान सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए थे। जंतर-मंतर और उसके आसपास के इलाके में बड़ी संख्या में पुलिसकर्मी तैनात किए गए थे। पुलिस लगातार स्थिति पर नजर बनाए हुए थी ताकि किसी प्रकार की अप्रिय घटना न हो। प्रदर्शन शांतिपूर्ण तरीके से चल रहा था, लेकिन जैसे-जैसे भीड़ बढ़ती गई, सुरक्षा एजेंसियों की सतर्कता भी बढ़ती गई। शाम होते-होते प्रदर्शन के समय को लेकर नया विवाद सामने आ गया। अभिजीत दीपके ने दिल्ली पुलिस से प्रदर्शन की अवधि बढ़ाने की मांग की थी ताकि अधिक से अधिक छात्र अपनी बात रख सकें। हालांकि पुलिस ने निर्धारित समय के बाद अनुमति बढ़ाने से इनकार कर दिया। इसके बाद प्रदर्शनकारियों और पुलिस के बीच बातचीत का दौर चला। सीजेपी के नेताओं ने कहा कि छात्रों की समस्याएं इतनी गंभीर हैं कि उन्हें कुछ घंटों के प्रदर्शन तक सीमित नहीं किया जा सकता।

पुलिस की ओर से अनुमति न बढ़ाए जाने के बावजूद अभिजीत दीपके ने स्पष्ट कहा कि वे प्रदर्शन स्थल को तुरंत छोड़ने के पक्ष में नहीं हैं। उनका कहना था कि जब तक छात्रों की आवाज को गंभीरता से नहीं सुना जाएगा, तब तक आंदोलन जारी रहेगा। इस बयान के बाद प्रदर्शन स्थल पर मौजूद समर्थकों ने और जोरदार नारेबाजी शुरू कर दी। कुछ समय के लिए माहौल और अधिक राजनीतिक हो गया तथा विभिन्न छात्र संगठनों के प्रतिनिधियों ने भी अपनी-अपनी बातें रखीं।

प्रदर्शन में शामिल छात्रों का कहना था कि उनका उद्देश्य किसी राजनीतिक दल का समर्थन या विरोध करना नहीं, बल्कि अपने भविष्य को सुरक्षित बनाना है। उनका आरोप था कि पेपर लीक और परीक्षा में गड़बड़ियों के कारण प्रतिभाशाली और मेहनती छात्रों को बार-बार नुकसान उठाना पड़ता है। कई छात्रों ने कहा कि वे वर्षों तक तैयारी करते हैं, आर्थिक और मानसिक दबाव झेलते हैं, लेकिन जब परीक्षा रद्द होती है या विवादों में घिर जाती है तो उनकी मेहनत पर पानी फिर जाता है।

जंतर-मंतर पर हुआ यह प्रदर्शन एक बार फिर इस बात का संकेत देता है कि परीक्षा और भर्ती प्रक्रियाओं को लेकर युवाओं में चिंता और असंतोष मौजूद है। चाहे विरोध का तरीका थाली और चम्मच बजाने जैसा प्रतीकात्मक क्यों न हो, लेकिन उसके पीछे छिपा संदेश गंभीर है। प्रदर्शनकारियों का कहना है कि वे केवल पारदर्शी, निष्पक्ष और विश्वसनीय परीक्षा प्रणाली चाहते हैं, जहां किसी छात्र का भविष्य प्रशासनिक लापरवाही या कथित भ्रष्टाचार की भेंट न चढ़े।

अब देखना यह होगा कि इस विरोध प्रदर्शन का सरकार और संबंधित संस्थाओं पर कितना प्रभाव पड़ता है। फिलहाल जंतर-मंतर पर गूंजे थाली-चम्मच के शोर ने इतना जरूर साबित कर दिया है कि देश का युवा अपने भविष्य से जुड़े मुद्दों पर चुप बैठने को तैयार नहीं है। वह अपनी आवाज हर संभव तरीके से उठाना चाहता है और चाहता है कि उसकी मेहनत, उसके सपनों और उसके अधिकारों को गंभीरता से सुना जाए।

टीएमसी में मचा सियासी भूचाल, 440 करोड़ के फंड पर घमासान से खुलकर सामने आई अंदरूनी जंग

कोलकाता। पश्चिम बंगाल की सियासत में एक बार फिर तृणमूल कांग्रेस के भीतर का संघर्ष खुलकर सामने आ गया है। विधानसभा चुनाव में झटके झेलने के बाद पार्टी जहां राजनीतिक चुनौतियों से जूझ रही है, वहीं अब आर्थिक और संगठनात्मक विवादों ने भी नेतृत्व की मुश्किलें बढ़ा दी हैं। पार्टी के बैंक खातों में जमा सैकड़ों करोड़ रुपये के फंड को लेकर उठे विवाद ने टीएमसी के अंदर चल रही खींचतान को सार्वजनिक कर दिया है। इस पूरे घटनाक्रम के केंद्र में एक ओर बागी नेता ऋतब्रत बनर्जी हैं तो दूसरी ओर पार्टी के वरिष्ठ नेता और विधायक कुणाल घोष, जिन्होंने अपने ही पूर्व सहयोगी पर तीखा हमला बोलते हुए कई गंभीर सवाल खड़े किए हैं।

राजनीतिक गलियारों में सबसे अधिक चर्चा उस कथित 440 करोड़ रुपये के फंड को लेकर हो रही है, जो पार्टी के प्रमुख बैंक खातों में जमा बताया जा रहा है। इन खातों को लेकर उठे विवाद ने न केवल संगठन के भीतर असंतोष को उजागर किया है, बल्कि विपक्ष को भी सरकार और सत्तारूढ़ दल पर निशाना साधने का अवसर दे दिया है। पार्टी सूत्रों के अनुसार कुछ बागी नेताओं की शिकायत के बाद टीएमसी के तीन प्रमुख बैंक खातों पर कार्रवाई की गई, जिससे इन खातों से धन निकासी पर रोक लग गई। इस घटनाक्रम ने पार्टी के भीतर कई तरह के सवाल खड़े कर दिए हैं और नेतृत्व की कार्यशैली पर भी बहस तेज हो गई है।

इसी बीच बेलेघाटा से विधायक और तृणमूल कांग्रेस के प्रमुख चेहरों में शामिल कुणाल घोष ने बागी नेता ऋतब्रत बनर्जी के खिलाफ मोर्चा खोल दिया। घोष ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि यदि ऋतब्रत बनर्जी को पार्टी के फंड और उसके प्रबंधन पर इतना ही संदेह था, तो उन्हें चुनाव के दौरान उसी फंड का लाभ नहीं लेना चाहिए था। उन्होंने सवाल उठाया कि जिस व्यवस्था पर आज आरोप लगाए जा रहे हैं, उसी व्यवस्था के संसाधनों का उपयोग अतीत में क्यों किया गया। उनके अनुसार यह केवल राजनीतिक अवसरवाद है और ऐसे आरोपों के पीछे व्यक्तिगत नाराजगी अधिक दिखाई देती है।

कुणाल घोष का बयान ऐसे समय आया है जब पार्टी के भीतर असंतोष की खबरें लगातार सामने आ रही हैं। पिछले कुछ समय से टीएमसी के कई नेताओं और जनप्रतिनिधियों द्वारा संगठनात्मक फैसलों पर सवाल उठाए जाते रहे हैं। हालांकि पार्टी नेतृत्व लगातार यह दावा करता रहा है कि संगठन पूरी तरह एकजुट है, लेकिन हालिया घटनाक्रम ने इन दावों को चुनौती देने का काम किया है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि किसी भी बड़े राजनीतिक दल में मतभेद होना सामान्य बात है, लेकिन जब विवाद सार्वजनिक मंचों तक पहुंच जाए और आर्थिक मामलों से जुड़ जाए, तब उसका असर संगठन की छवि पर भी पड़ता है।

इस पूरे विवाद की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी वे बैंक खाते हैं, जिनमें कथित तौर पर सैकड़ों करोड़ रुपये जमा बताए जा रहे हैं। इन खातों पर लगी रोक ने पार्टी के भीतर वित्तीय प्रबंधन को लेकर नई बहस शुरू कर दी है। सूत्रों का दावा है कि खातों में लगभग 440 करोड़ रुपये मौजूद हैं, जबकि कुछ रिपोर्टों में यह राशि 600 करोड़ रुपये तक बताई गई थी। हालांकि वास्तविक राशि को लेकर अलग-अलग दावे किए जा रहे हैं, लेकिन इतना स्पष्ट है कि मामला बेहद संवेदनशील और राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण बन चुका है।

राजनीतिक जानकारों का कहना है कि किसी भी दल के लिए उसका संगठनात्मक फंड बेहद अहम होता है। चुनावी गतिविधियों से लेकर संगठन संचालन, जनसंपर्क अभियानों और विभिन्न कार्यक्रमों तक के लिए इसी धन का उपयोग किया जाता है। ऐसे में यदि किसी पार्टी के प्रमुख खातों पर रोक लग जाए तो उसका असर केवल आर्थिक नहीं, बल्कि राजनीतिक भी होता है। यही कारण है कि यह मामला पश्चिम बंगाल की राजनीति में चर्चा का प्रमुख विषय बन गया है।

विपक्षी दल भी इस मुद्दे को लेकर लगातार हमलावर हैं। उनका आरोप है कि टीएमसी के भीतर लंबे समय से चल रही असंतुष्टि अब खुलकर सामने आ रही है। विपक्ष का कहना है कि यदि पार्टी के अपने ही नेता वित्तीय पारदर्शिता पर सवाल उठा रहे हैं, तो यह गंभीर चिंता का विषय है। हालांकि टीएमसी नेतृत्व इस पूरे मामले को आंतरिक विवाद बताते हुए इसे राजनीतिक रूप से बढ़ा-चढ़ाकर पेश किए जाने का आरोप लगा रहा है।

दूसरी ओर, पार्टी समर्थकों का तर्क है कि किसी भी बड़े संगठन में विचारों का मतभेद हो सकता है, लेकिन इससे संगठन की मूल शक्ति प्रभावित नहीं होती। उनका कहना है कि तृणमूल कांग्रेस पश्चिम बंगाल की सबसे बड़ी राजनीतिक ताकत बनी हुई है और कुछ नेताओं की नाराजगी से पार्टी की जनाधार पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। फिर भी यह तथ्य नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि हाल के महीनों में पार्टी के भीतर असहमति के स्वर पहले की तुलना में अधिक मुखर हुए हैं।

मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के लिए यह स्थिति इसलिए भी चुनौतीपूर्ण मानी जा रही है क्योंकि पार्टी पहले से ही कई राजनीतिक मोर्चों पर दबाव का सामना कर रही है। ऐसे समय में संगठन के भीतर से उठने वाले सवाल नेतृत्व के लिए अतिरिक्त परेशानी पैदा कर सकते हैं।

भारतीय नाविकों की मौत पर कांग्रेस का हमला, बोली देशहित से ज्यादा छवि निर्माण में व्यस्त है सरकार

नई दिल्ली। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के साथ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की हालिया मुलाकात को लेकर कांग्रेस ने केंद्र सरकार पर तीखा राजनीतिक हमला बोला है। पार्टी ने आरोप लगाया है कि सरकार की प्राथमिकता राष्ट्रीय हितों की रक्षा करने के बजाय अपनी छवि और प्रचार को मजबूत करना बन गई है। कांग्रेस नेताओं का कहना है कि अमेरिकी हमले में तीन भारतीय नाविकों की मौत जैसे गंभीर मुद्दे को प्रधानमंत्री ने अमेरिकी राष्ट्रपति के सामने प्रभावी ढंग से नहीं उठाया, जिससे देश के सम्मान और भारतीय नागरिकों के हितों की अनदेखी हुई है।

जी-7 शिखर सम्मेलन के दौरान हुई प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रपति ट्रंप की द्विपक्षीय बैठक अब राजनीतिक विवाद का विषय बन गई है। अंतरराष्ट्रीय मंच पर दोनों नेताओं के बीच हुई बातचीत और उसके बाद सामने आए दृश्य तथा बयानों को लेकर विपक्ष लगातार सवाल उठा रहा है। कांग्रेस का आरोप है कि जब भारतीय नागरिकों के जीवन और राष्ट्रीय सम्मान से जुड़ा मुद्दा मौजूद था, तब सरकार को अधिक दृढ़ और स्पष्ट रुख अपनाना चाहिए था।

कांग्रेस के मीडिया और प्रचार विभाग के प्रमुख पवन खेड़ा ने इस विषय पर आयोजित प्रेस वार्ता में प्रधानमंत्री की विदेश नीति और उनकी कूटनीतिक शैली पर गंभीर सवाल खड़े किए। उन्होंने दावा किया कि बैठक के दौरान प्रधानमंत्री का रवैया ऐसा दिखाई दे रहा था मानो वह किसी शक्तिशाली नेता के सामने असहज स्थिति में हों। खेड़ा ने कहा कि दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के प्रधानमंत्री से देश एक आत्मविश्वासपूर्ण और मजबूत नेतृत्व की अपेक्षा करता है, लेकिन बैठक की तस्वीरों और वीडियो से वैसा संदेश नहीं गया।

कांग्रेस नेता ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय संबंधों में शिष्टाचार और कूटनीतिक भाषा का महत्व होता है, लेकिन इसके साथ ही राष्ट्रीय हितों की रक्षा करना भी उतना ही आवश्यक होता है। उनके अनुसार जब तीन भारतीय नाविकों की मौत जैसी घटना सामने थी, तब भारत को स्पष्ट रूप से अपनी चिंता और आपत्ति दर्ज करानी चाहिए थी। कांग्रेस का आरोप है कि इस मुद्दे पर अपेक्षित दृढ़ता नहीं दिखाई गई और अमेरिकी पक्ष से किसी प्रकार की सार्वजनिक संवेदना या खेद व्यक्त नहीं किया गया।

पवन खेड़ा ने कहा कि भारतीय नागरिकों की सुरक्षा और सम्मान किसी भी सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए। उनका आरोप था कि प्रधानमंत्री ने बैठक में इस मुद्दे को उस गंभीरता से नहीं उठाया जिसकी अपेक्षा देशवासियों को थी। उन्होंने कहा कि सरकार बार-बार "राष्ट्र प्रथम" की बात करती है, लेकिन व्यवहार में उसकी प्राथमिकताएं कुछ और दिखाई देती हैं। कांग्रेस का कहना है कि वर्तमान सरकार की राजनीति में प्रचार और जनसंपर्क को अत्यधिक महत्व दिया जा रहा है, जबकि वास्तविक राष्ट्रीय मुद्दे पीछे छूटते दिखाई देते हैं।

प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान खेड़ा ने प्रधानमंत्री और अमेरिकी राष्ट्रपति की मुलाकात के दृश्यात्मक पक्ष पर भी टिप्पणी की। उन्होंने कहा कि अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत का प्रतिनिधित्व करने वाले नेता से देश आत्मविश्वास और दृढ़ता की अपेक्षा करता है। कांग्रेस नेता के अनुसार बैठक के दौरान जो दृश्य सामने आए, वे उस अपेक्षा के अनुरूप नहीं थे। उन्होंने इसे भारत की वैश्विक छवि से जुड़ा विषय बताते हुए कहा कि दुनिया भारत को एक उभरती हुई महाशक्ति के रूप में देखती है और ऐसे में देश के नेतृत्व को भी उसी आत्मविश्वास के साथ अपनी बात रखनी चाहिए।

कांग्रेस ने इस पूरे घटनाक्रम को विदेश नीति और राष्ट्रीय सम्मान के व्यापक प्रश्न से जोड़ने की कोशिश की है। पार्टी का कहना है कि भारत अब केवल एक क्षेत्रीय शक्ति नहीं बल्कि वैश्विक मंच पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला देश है। इसलिए जब भारतीय नागरिकों को नुकसान पहुंचाने वाली कोई घटना होती है, तो उस पर स्पष्ट और कड़ा रुख अपनाना आवश्यक है। कांग्रेस का आरोप है कि सरकार ने इस अवसर का उपयोग भारतीय हितों की रक्षा करने के बजाय अपनी छवि को मजबूत करने के लिए किया।

पवन खेड़ा ने विदेश मंत्री एस. जयशंकर को लेकर भी टिप्पणी की और कहा कि सरकार के शीर्ष नेतृत्व को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अधिक प्रभावशाली और परिणामोन्मुखी कूटनीति अपनाने की आवश्यकता है। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार अपनी उपलब्धियों का प्रचार करने में तो सक्रिय रहती है, लेकिन जब कठिन सवाल पूछने या जवाब मांगने की जरूरत होती है, तब वह उतनी मुखर नहीं दिखाई देती।

आय घटी तो मचा सियासी बवाल, अब बोले कालगे- जनसेवा को कभी नुकसान नहीं बताया

लातूर। राजनीति में दिए गए एक बयान को लेकर उठे विवाद के बीच कांग्रेस सांसद डॉ. शिवाजी कालगे ने अपनी स्थिति स्पष्ट करते हुए कहा है कि उनके शब्दों को संदर्भ से काटकर पेश किया गया और इससे एक ऐसा संदेश प्रसारित हुआ जो उनके वास्तविक विचारों से बिल्कुल मेल नहीं खाता। उन्होंने साफ कहा कि उन्होंने कभी भी सार्वजनिक जीवन में आने को नुकसान नहीं बताया और न ही सांसद बनने पर किसी प्रकार का पछतावा व्यक्त किया है। उनके अनुसार वह केवल अपने पेशेवर जीवन पर पड़े प्रभाव का उल्लेख कर रहे थे, लेकिन कुछ लोगों ने उसे इस तरह प्रस्तुत किया मानो वह राजनीति में आने को आर्थिक दृष्टि से घाटे का सौदा मानते हों।

पिछले कुछ दिनों से डॉ. शिवाजी कालगे का एक बयान राजनीतिक और सोशल मीडिया हलकों में चर्चा का विषय बना हुआ था। उनके द्वारा अपनी मेडिकल प्रैक्टिस और आय में आई कमी का जिक्र किए जाने के बाद विभिन्न प्रकार की प्रतिक्रियाएं सामने आई थीं। कुछ लोगों ने इसे जनप्रतिनिधियों के जीवन में आने वाले बदलावों की ईमानदार स्वीकारोक्ति माना, जबकि कुछ ने इसे राजनीति में आने के बाद हुए आर्थिक नुकसान की शिकायत के रूप में प्रस्तुत किया। विवाद बढ़ने के बाद अब स्वयं सांसद को सामने आकर सफाई देनी पड़ी है।

लातूर लोकसभा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर रहे डॉ. शिवाजी कालगे ने सोशल मीडिया के माध्यम से जारी अपने स्पष्टीकरण में कहा कि एक साक्षात्कार के दौरान उनसे पूछा गया था कि सक्रिय राजनीति में आने के बाद उनकी निजी और पेशेवर जिंदगी पर क्या असर पड़ा है। उन्होंने उसी प्रश्न का उत्तर देते हुए बताया था कि सांसद बनने के बाद उनकी चिकित्सा सेवाओं और अस्पताल के कार्यों को पहले की

तरह समय देना संभव नहीं रह गया है। उनका कहना था कि यह एक स्वाभाविक स्थिति है, क्योंकि लोकसभा सदस्य के रूप में उन्हें अपने संसदीय क्षेत्र, जनता की समस्याओं और राजनीतिक जिम्मेदारियों के लिए अधिक समय देना पड़ता है। कालगे ने कहा कि उनके बयान का उद्देश्य केवल यह बताना था कि सार्वजनिक जीवन में आने के बाद उनके पेशेवर कार्यों की गति प्रभावित हुई है। उन्होंने कभी यह नहीं कहा कि उन्हें राजनीति में आने का अफसोस है या वह अपने फैसले पर पछता रहे हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि कुछ लोगों ने जानबूझकर उनके बयान को तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत किया, जिससे गलतफहमी पैदा हुई और लोगों के बीच भ्रम फैलाने की कोशिश की गई।

दरअसल, कुछ दिन पहले डॉ. कालगे ने एक बातचीत के दौरान अपनी आय में आई कमी का उल्लेख किया था। उन्होंने बताया था कि वित्तीय वर्ष 2023-24 में उन्होंने लगभग 36 लाख रुपये आयकर का भुगतान किया था, जबकि 2024-25 में उनकी आय कम होने के कारण उनका कर भुगतान घटकर लगभग 8.75 लाख रुपये रह गया। इस टिप्पणी के बाद राजनीतिक हलकों में बहस शुरू हो गई थी। कई लोगों ने यह सवाल उठाया कि क्या सांसद बनने के बाद उन्हें आर्थिक नुकसान हुआ है। इसी चर्चा ने धीरे-धीरे विवाद का रूप ले लिया। हालांकि अपने ताजा बयान में कालगे ने स्पष्ट किया कि आय में कमी का जिक्र केवल एक तथ्यात्मक जानकारी थी, जिसका उद्देश्य यह बताना था कि अब उनका अधिक समय जनसेवा और राजनीतिक जिम्मेदारियों में व्यतीत हो रहा है। उन्होंने कहा कि यदि कोई व्यक्ति अपने पेशेवर जीवन का बड़ा हिस्सा समाज और जनता के लिए समर्पित करता है, तो उसके निजी व्यवसाय पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं लगाया जाना चाहिए कि वह उस जिम्मेदारी को बोझ मानता है। कांग्रेस सांसद ने इस अवसर पर जनप्रतिनिधि के रूप में अपनी भूमिका को लेकर भी विस्तार से बात की। उन्होंने कहा कि लोकसभा में जनता की आवाज उठाने और क्षेत्र के विकास के लिए काम करने का अवसर उनके लिए किसी भी आर्थिक लाभ से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि धन और आय की तुलना जनसेवा के अवसर से नहीं की जा सकती। उनके अनुसार लोगों का विश्वास जीतना और संसद तक पहुंचना उनके जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक है।

डॉ. कालगे ने अपनी राजनीतिक यात्रा का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि उनकी कोई राजनीतिक पारिवारिक पृष्ठभूमि नहीं रही है। वह मूल रूप से चिकित्सा क्षेत्र से जुड़े रहे हैं और लंबे समय तक डॉक्टर के रूप में लोगों की सेवा करते रहे हैं। लेकिन कांग्रेस पार्टी ने उन पर भरोसा जताया और उन्हें 2024 के लोकसभा चुनाव में उम्मीदवार बनाया। उन्होंने कहा कि पार्टी द्वारा दिखाया गया विश्वास और लातूर की जनता द्वारा दिया गया समर्थन उनके लिए सम्मान की बात है।

उन्होंने कहा कि चुनाव जीतकर संसद पहुंचना उनके लिए केवल एक राजनीतिक उपलब्धि नहीं, बल्कि लोगों की अपेक्षाओं और विश्वास का प्रतीक है। यही कारण है कि वह अपनी जिम्मेदारियों को पूरी गंभीरता और निष्ठा के साथ निभाने का प्रयास कर रहे हैं। उनका कहना था कि यदि किसी जनप्रतिनिधि को अपने क्षेत्र की समस्याओं को समझना और उनका समाधान निकालना है, तो उसे स्वाभाविक रूप से अपने निजी कार्यों से कुछ समय निकालकर जनता के बीच रहना होगा।

कालगे ने यह भी कहा कि राजनीति में आने के बाद उन्हें जो प्यार, सम्मान और समर्थन मिला है, उसकी कोई आर्थिक कीमत नहीं लगाई जा सकती। उन्होंने कहा कि पार्टी कार्यकर्ताओं, गठबंधन सहयोगियों और क्षेत्र की जनता ने जिस प्रकार उन पर भरोसा जताया है, वह उनके लिए किसी भी व्यक्तिगत लाभ से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। यही विश्वास उन्हें लगातार काम करने और जनता की अपेक्षाओं पर खरा उतरने के लिए प्रेरित करता है।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि सार्वजनिक जीवन में सक्रिय रहने वाले कई पेशेवर लोगों को इसी प्रकार की परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। डॉक्टर, वकील, उद्योगपति या अन्य पेशेवर जब राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाने लगते हैं, तो उनकी निजी आय और पेशेवर गतिविधियों पर असर पड़ना असामान्य नहीं होता। लेकिन ऐसे मामलों में दिए गए बयानों की राजनीतिक व्याख्या भी तेजी से होने लगती है, जिससे कई बार मूल संदर्भ पीछे छूट जाता है।

संपादकीय

सेहत पर भारी विकास

इस बात में दो राय नहीं कि हरियाणा की समृद्धि में औद्योगिक विकास की बड़ी भूमिका रही है। जिसमें बड़ी संख्या में राज्य के लोगों को रोजगार भी मिला है। हरियाणा अपनी औद्योगिक सफलता की प्रेरक कहानी पर गर्व करता रहा है। मानेसर के ऑटोमोबाइल हब से लेकर राज्य भर में फैले मैन्युफैक्चरिंग क्लस्टर के उद्योगों में बड़े पैमाने पर नौकरियों के अवसर पैदा हुए हैं। निस्संदेह, इससे राज्य के आर्थिक विकास को भी गति मिली है। लेकिन इस विकास की दूसरी तस्वीर चिंता बढ़ाने वाली है। हरियाणा राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की यह बात चिंतित करने वाली है कि राज्य में तीन हजार औद्योगिक इकाइयों में वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने वाले पर्याप्त उपकरण ही नहीं लगे हैं। जो एक गंभीर स्थिति को दर्शाती है। निस्संदेह, कोई भी विकास साफ हवा की कीमत पर नहीं किया जाना चाहिए। चिंता की बात यह भी है कि प्रदूषण नियामक उपकरणों की कमी वाली औद्योगिक इकाइयों की सूची में मानेसर सबसे ऊपर पाया गया है। यह औद्योगिक टाउनशिप न केवल हरियाणा का प्रमुख आर्थिक इंजन है, बल्कि हजारों श्रमिकों और उनके परिवारों का घर भी है। जो आज हर दिन कारखानों से निकलने वाले धुएं से प्रभावित हवा में सांस लेने को अभिशप्त हैं। विडंबना यह है कि अब तक इस संकट को गंभीरता से नहीं लिया गया। इस स्थिति को सुधारने के लिये कोई सार्थक पहल भी नहीं हुई है। बड़ी विचित्र बात है कि गाहे-बगाहे हर साल मौसमी स्मॉग या पराली जलाने को लेकर आरोप-प्रत्यारोपों का सिलसिला चलता रहता है। जबकि कोई वैज्ञानिक अध्ययन भी हमारे सामने नहीं आया कि स्मॉग व पराली जलाने की राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में होने वाले प्रदूषण में कितनी भूमिका होती है। लेकिन जिन औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाले प्रदूषण को हम नाप कर नियंत्रित कर सकते हैं, उस दिशा में कोई सार्थक पहल नहीं की गई। सालभर चलने वाली औद्योगिक उत्सर्जन की समस्या को प्राथमिकता के आधार पर संबोधित किया जाना चाहिए।

यह तथ्य किसी से छिपा नहीं है कि वर्ष पर्यंत होने वाले औद्योगिक उत्सर्जन से हवा की गुणवत्ता खराब ही होती है। जिससे सांस संबंधी रोगों को बढ़ावा मिलता है। ये स्थितियां लोगों के जीवन की गुणवत्ता में गिरावट ही पैदा करती हैं। विडंबना यह है कि पर्यावरण की दृष्टि से बेहद संवेदनशील इलाकों, विशेष रूप से देश के नेशनल कैपिटल रीजन यानी एनसीआर में काम करने वाली औद्योगिक इकाइयों को अपनी जिम्मेदारी व जवाबदेही का अच्छे से पता होता है। यह दुर्भाग्यपूर्ण ही है कि इसके बावजूद हजारों इकाइयां नियमों को ताक पर रखकर मुनाफा कमाने में लगी हैं, वह भी हजारों लोगों की सांसों की कीमत पर। यह नियामक तंत्र द्वारा नियमों को लागू करने और जवाबदेही तय करने में बड़ी नाकामी को ही दर्शाता है। इस जटिल समस्या का समाधान सिर्फ नोटिस जारी करने तक सीमित नहीं होना चाहिए। वह बात अलग है कि कुछ छोटी और मध्यम दर्जे की कंपनियों को साफ-सुथरी टेक्नोलॉजी अपनाने के लिये तकनीकी सहायता और आर्थिक मदद की जरूरत हो सकती है। इसके बावजूद प्रदूषणरोधी उपकरण लगाने की समय-सीमा और निर्धारित मानकों को लेकर किसी तरह का समझौता नहीं किया जा सकता। सही मायने में चेतावनी के बावजूद बार-बार नियमों का उल्लंघन करने वालों पर कड़ा जुर्माना लगाया जाना चाहिए। यह एक हकीकत है कि साफ हवा औद्योगिक विकास में कोई बाधा उत्पन्न नहीं करती है। यही स्थायी व दूरगामी परिणामों वाले विकास की अपरिहार्य शर्त भी है। सही मायनों में हरियाणा की अर्थव्यवस्था तब तक फल-फूल नहीं सकती, जब तक यहां के लोगों को अपनी सेहत की कीमत पर यह विकास करना पड़े। इसमें दो राय नहीं कि प्रगति और विकास की दृष्टि से राज्य के उद्योगों ने अग्रणी भूमिका निभाई है। इन उद्यमियों ने इनोवेशन और प्रतिस्पर्धा की कसौटी पर अपनी बेहतर क्षमताओं को साबित किया भी है। अब उन्हें इस बात के लिये प्रेरित करना होगा कि वे अब पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी निभाने में भी वैसी ही प्रतिबद्धता दर्शाएं। सही मायने में किसी भी समाज में असली समृद्धि तभी आ सकती है जब हमारी प्राथमिकताओं में जन-स्वास्थ्य पहले हो।

योग है दुनिया के लिए भारत का शाश्वत अवदान

“योग की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह केवल रोगों से मुक्ति नहीं देता, बल्कि जीवन को दिशा देता है। पातंजलि ने योग को “चित्तवृत्ति निरोध” कहा है। अर्थात् मन की चंचलता और विकारों पर नियंत्रण। जब मन नियंत्रित होता है, तब व्यक्ति में निर्णय क्षमता, धैर्य और आत्मविश्वास का विकास होता है।

आज जब पूरी दुनिया युद्धों, आतंकवाद, हिंसा, मानसिक तनाव, पर्यावरणीय संकट और नई-नई बीमारियों की चुनौतियों से घिरी हुई है, तब मानवता एक ऐसे मार्ग की तलाश में है जो केवल शरीर को ही नहीं, बल्कि मन, बुद्धि और आत्मा को भी संतुलित कर सके। ऐसे संक्रमणकाल में योग केवल एक व्यायाम पद्धति या स्वास्थ्य विज्ञान नहीं, बल्कि मानव सभ्यता के लिए आशा का प्रकाश-स्तंभ बनकर उभरा है। यही कारण है कि अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस आज केवल भारत का नहीं, बल्कि सम्पूर्ण विश्व का उत्सव बन गया है। भारत अनादिकाल से योग की भूमि रहा है। इस भूमि के कण-कण में ऋषियों, मुनियों, तपस्वियों और योगियों की साधना की सुगंध समाई हुई है। वैदिक ऋषियों से लेकर भगवान महावीर, भगवान बुद्ध, आदि शंकराचार्य, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गांधी, श्री अरविन्द, आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ तक, सभी ने योग को जीवन के उत्कर्ष और मानव कल्याण का आधार माना। योग ने भारत की आध्यात्मिक चेतना को ही नहीं गढ़ा, बल्कि विश्व को यह संदेश भी दिया कि मनुष्य का वास्तविक विकास भीतर से प्रारंभ होता है। आज विश्व जिस दिशा में बढ़ रहा है, वह चिंता का विषय है। रूस-यूक्रेन युद्ध, पश्चिम एशिया में संघर्ष, आतंकवाद की घटनाएं, साम्प्रदायिक तनाव और हथियारों की बढ़ती होड़ मानव सभ्यता को भय और असुरक्षा की ओर धकेल रही है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, विज्ञान और तकनीक ने अभूतपूर्व सुविधाएं दी हैं, लेकिन इनके साथ विनाश की संभावनाएं भी बढ़ी हैं। ऐसे समय में योग की प्रासंगिकता पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है। योग मनुष्य को भीतर से शांत, संतुलित और संवेदनशील बनाता है। जब व्यक्ति के भीतर शांति होगी, तभी समाज और राष्ट्र में शांति का वातावरण निर्मित होगा। योग का मूल अर्थ ही है-जोड़ना। यह मनुष्य को मनुष्य से, आत्मा को परमात्मा से, व्यक्ति को समाज से और मानवता को सम्पूर्ण सृष्टि से जोड़ता है। योग विभाजन नहीं, एकता का दर्शन है। इसलिए वह हिंसा, घृणा, आतंक और संघर्ष का स्वाभाविक प्रतिरोधक है। जो व्यक्ति योग

के माध्यम से अपने भीतर करुणा, प्रेम और अहिंसा का विकास करता है, वह किसी के प्रति द्वेष नहीं रख सकता। यही कारण है कि महात्मा गांधी की अहिंसा और भगवान महावीर का जीव-दया का संदेश भी योग की व्यापक चेतना से जुड़ा हुआ दिखाई देता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार आज मानसिक तनाव, अवसाद, अनिद्रा, उच्च रक्तचाप, मधुमेह, हृदय रोग, मोटापा और जीवनशैली से जुड़ी बीमारियां तेजी से बढ़ रही हैं। आधुनिक जीवन की भागदौड़ में मनुष्य बाहरी उपलब्धियों के पीछे दौड़ रहा है, लेकिन भीतर से खाली और अशांत होता जा रहा है। ऐसी स्थिति में योग एक समग्र चिकित्सा-पद्धति के रूप में सामने आया है। योग शरीर, मन और भावनाओं के बीच संतुलन स्थापित करता है। नियमित आसन, प्राणायाम और ध्यान व्यक्ति की प्रतिरक्षा शक्ति को बढ़ाते हैं, तनाव को कम करते हैं तथा मानसिक स्वास्थ्य को मजबूत बनाते हैं। कोविड-19 महामारी के दौरान भी दुनिया ने अनुभव किया कि स्वस्थ जीवनशैली और मजबूत प्रतिरोधक क्षमता कितनी महत्वपूर्ण है। उस समय योग, प्राणायाम और ध्यान ने करोड़ों लोगों को शारीरिक एवं मानसिक रूप से सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आज भी चिकित्सक और स्वास्थ्य विशेषज्ञ स्वीकार करते हैं कि योग अनेक बीमारियों की रोकथाम और प्रबंधन में अत्यंत प्रभावी सहायक माध्यम है। यह दवाओं का विकल्प नहीं, बल्कि स्वस्थ जीवन का आधार है।

योग की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह केवल रोगों से मुक्ति नहीं देता, बल्कि जीवन को दिशा देता है। पातंजलि ने योग को “चित्तवृत्ति निरोध” कहा है। अर्थात् मन की चंचलता और विकारों पर नियंत्रण। जब मन नियंत्रित होता है, तब व्यक्ति में निर्णय क्षमता, धैर्य और आत्मविश्वास का विकास होता है। आज की पीढ़ी, जो तनाव, प्रतिस्पर्धा और डिजिटल व्यसनों के बीच जी रही है, उसके लिए योग मानसिक संतुलन का सबसे सशक्त माध्यम बन सकता है। योग का एक महत्वपूर्ण पक्ष उसका नैतिक और मानवीय आयाम भी है। यम और नियम जैसे सिद्धांत सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, संयम और संतोष की शिक्षा देते हैं। यदि इन मूल्यों को व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में अपनाया जाए, तो हिंसा, भ्रष्टाचार, अपराध और सामाजिक विद्वेष जैसी समस्याओं में स्वाभाविक कमी आ सकती है। इसलिए योग केवल स्वास्थ्य का विषय नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण और सामाजिक पुनर्निर्माण का भी अभियान है। भारतीय संस्कृति की वैश्विक स्वीकार्यता में योग की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की पहल पर संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस घोषित किया जाना भारत की सांस्कृतिक शक्ति और विश्वसनीयता का बड़ा प्रमाण है। आज दुनिया के लगभग सभी देशों में योग का अभ्यास किया जा रहा है। यह केवल एक कूटनीतिक उपलब्धि नहीं, बल्कि भारतीय ज्ञान परंपरा की वैश्विक विजय है। प्रधानमंत्री मोदी ने योग के साथ-साथ भारतीय अहिंसा, आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा, मिलेट्स आधारित भारतीय खानपान और “वसुधैव कुटुम्बकम्” की अवधारणा को भी विश्व मंच पर स्थापित करने का प्रयास किया है। यह संदेश अत्यंत महत्वपूर्ण है कि भारत केवल आर्थिक या सैन्य शक्ति बनने का सपना नहीं देखता, बल्कि मानवता को स्वस्थ, संतुलित और शांतिपूर्ण जीवन का मार्ग दिखाने की क्षमता भी रखता है। यही “विश्वगुरु भारत” की अवधारणा का मूल है।

भारतीय आयुर्वेद और योग का संबंध भी अत्यंत गहरा है। आयुर्वेद शरीर की चिकित्सा करता है, जबकि योग मन और चेतना को संतुलित करता है। दोनों मिलकर स्वस्थ जीवन की संपूर्ण व्यवस्था प्रस्तुत करते हैं। आज जब दुनिया रासायनिक दवाओं के दुष्प्रभावों और जीवनशैली जनित रोगों से चिंतित है, तब योग और आयुर्वेद एक वैकल्पिक नहीं, बल्कि पूरक एवं स्थायी समाधान के रूप में उभर रहे हैं। इतिहास साक्षी है कि योग ने हर युग में एक मौन क्रांति को जन्म दिया है। इसने राजाओं को ऋषि बनाया, योद्धाओं को संत बनाया और सामान्य मनुष्यों को असाधारण व्यक्तित्व प्रदान किए। स्वामी विवेकानन्द ने योग के माध्यम से भारतीय अध्यात्म को विश्व के सामने रखा। महात्मा गांधी ने कर्मयोग और अहिंसा के बल पर एक साम्राज्य को चुनौती दी। श्री अरविन्द ने योग को मानव चेतना के विकास का साधन बनाया। यह सब योग की परिवर्तनकारी शक्ति के उदाहरण हैं। इसलिये योग दिवस उत्सव का नहीं, संकल्प का अवसर बने। विद्यालयों, विश्वविद्यालयों, कार्यालयों, उद्योगों और सामाजिक संस्थाओं में योग को जीवनशैली के रूप में अपनाने की पहल हो। परिवारों में योग, ध्यान और सकारात्मक संवाद की संस्कृति विकसित हो। यदि व्यक्ति स्वस्थ होगा तो परिवार स्वस्थ होगा, परिवार स्वस्थ होगा तो समाज स्वस्थ होगा और समाज स्वस्थ होगा तो राष्ट्र एवं विश्व भी स्वस्थ और शांतिपूर्ण बन सकेगा।

योग और ध्यान की भारतीय परम्परा को आधुनिक युग की आवश्यकताओं के अनुरूप नई दिशा देने वाले महान दार्शनिक, चिंतक एवं आध्यात्मिक धर्मगुरु आचार्य महाप्रज्ञ का योगदान भी इस संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने ‘प्रेक्षाध्यान’ पद्धति के माध्यम से ध्यान की पारंपरिक अवधारणाओं को एक नया वैज्ञानिक एवं प्रयोगधर्मी स्वरूप प्रदान किया। सदियों से ध्यान मुख्यतः आध्यात्मिक साधना और मोक्ष के मार्ग के रूप में देखा जाता रहा था, किन्तु आचार्य महाप्रज्ञ ने उसे जीवन-विज्ञान, मानसिक स्वास्थ्य, भावनात्मक संतुलन और व्यक्तित्व विकास से जोड़कर एक नई क्रांति का सूत्रपात किया। उनका मानना था कि मनुष्य यदि अपने शरीर, श्वास, चित्त, भावों और चेतना को ‘प्रेक्षा’ अर्थात् गहराई से देखना सीख जाए, तो उसके भीतर छिपी अनेक मानसिक विकृतियां स्वतः समाप्त होने लगती हैं। प्रेक्षाध्यान ने ध्यान को केवल साधु-संतों की साधना न रहने देकर सामान्य जनजीवन का हिस्सा बनाया।

वर्तमान समय में मानवता जिस दोराहे पर खड़ी है, वहां योग केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि आवश्यकता बन गया है। यह शरीर को निरोग, मन को शांत, बुद्धि को निर्मल और आत्मा को जागृत करता है। यह युद्ध के स्थान पर शांति, हिंसा के स्थान पर करुणा और तनाव के स्थान पर संतुलन का मार्ग दिखाता है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का वास्तविक संदेश भी यही है कि मनुष्य बाहर की दुनिया को बदलने से पहले अपने भीतर की दुनिया को बदले। भारत ने योग के माध्यम से विश्व को एक अमूल्य उपहार दिया है। यदि मानवता इस उपहार का सही अर्थों में उपयोग करे, तो एक नई वैश्विक चेतना का उदय संभव है-ऐसी चेतना, जिसमें शांति हो, स्वास्थ्य हो, सह-अस्तित्व हो और समस्त मानवता के कल्याण का भाव हो। यही योग का स्वप्न है, यही भारत का संदेश है और यही भविष्य की सबसे बड़ी आवश्यकता भी।

प्रेरणा

एकाग्रता का चमत्कार: सफलता की हर ऊँचाई तक पहुँचने का अमोघ मंत्र

मनुष्य के जीवन में अनेक शक्तियाँ छिपी होती हैं, लेकिन उन सभी शक्तियों को सही दिशा देने वाली सबसे महत्वपूर्ण शक्ति एकाग्रता है। जिस व्यक्ति ने अपने मन को केंद्रित करना सीख लिया, उसके लिए कठिन से कठिन लक्ष्य भी आसान हो जाते हैं। इतिहास गवाह है कि संसार के अधिकांश महान व्यक्तियों ने अपनी सफलता का श्रेय किसी न किसी रूप में एकाग्रता को ही दिया है। चाहे वह विज्ञान का क्षेत्र हो, साहित्य हो, कला हो, खेल हो या आध्यात्मिकता, हर क्षेत्र में वही लोग आगे बढ़े हैं जिन्होंने अपने मन को भटकने से रोककर अपने लक्ष्य पर केंद्रित रखा।

एक दिन की बात है। नन्ही एन. वेल्लारमथी अपनी कक्षा में अन्य बच्चों के साथ बैठी थीं। उस दिन शिक्षिका बच्चों को महान संन्यासी और विचारक स्वामी विवेकानंद के जीवन के बारे में पढ़ा रही थीं। पूरी कक्षा बड़े ध्यान से उनकी बातें सुन रही थी। शिक्षिका ने बच्चों से कहा, “स्वामी विवेकानंद का मानना था कि यदि उन्हें अपनी शिक्षा फिर से आरंभ करने का अवसर मिले, तो वे केवल तथ्यों और जानकारियों को इकट्ठा करने पर ध्यान नहीं देंगे, बल्कि सबसे पहले अपनी एकाग्रता की शक्ति को विकसित करेंगे। उनका विश्वास था कि एकाग्र मन अपनी इच्छा के अनुसार कुछ भी प्राप्त कर सकता है।”

बच्चों के मन में यह बात सुनकर उत्सुकता जाग उठी। शिक्षिका ने आगे कहा, “स्वामी विवेकानंद एकाग्रता की तुलना सूर्य की किरणों से करते थे। क्या तुम सबने सूर्य को देखा है?” सभी बच्चों ने उत्साहपूर्वक सिर हिलाकर उत्तर दिया। सूर्य तो वे प्रतिदिन देखते थे, लेकिन उसकी किरणों और एकाग्रता के बीच क्या संबंध हो सकता है, यह जानने के लिए वे उत्सुक हो उठे।

शिक्षिका बच्चों को केवल शब्दों में समझाना नहीं चाहती थीं। उन्होंने एक छोटा-सा प्रयोग करने का निश्चय किया। उन्होंने एक लेंस लिया और उसके नीचे एक कागज़ रखा। फिर सूर्य की किरणों को उस लेंस के माध्यम से एक बिंदु पर केंद्रित किया। कुछ ही क्षणों में बच्चों ने आश्चर्य से देखा कि कागज़ से धुआँ उठने लगा और फिर वह जल गया।

यह दृश्य देखकर पूरी कक्षा रोमांचित हो उठी। नन्ही वेल्लारमथी की आँखों में आश्चर्य चमक उठा। वह उत्साहित होकर बोली, “वाह! यह तो चमत्कार है।”

शिक्षिका मुस्कुराईं और बोलीं, “नहीं बच्चों, यह कोई चमत्कार नहीं है। यह एकाग्र ऊर्जा का परिणाम है। सूर्य की किरणें पूरे आकाश में फैली रहती हैं, इसलिए उनका प्रभाव सामान्य होता है। लेकिन जब वही किरणें एक बिंदु पर केंद्रित हो जाती हैं, तो उनमें इतनी शक्ति आ जाती है कि वे कागज़ को भी जला सकती हैं। ठीक इसी प्रकार मनुष्य का मन भी होता है। यदि उसका ध्यान इधर-उधर भटकता रहे, तो उसकी शक्ति बिखर जाती है। लेकिन जब वह अपने लक्ष्य पर पूरी तरह केंद्रित हो जाता है, तो असंभव दिखाई देने वाले कार्य भी संभव हो जाते हैं।”

शिक्षिका की यह बात वेल्लारमथी के मन में गहराई से उतर गई। उस दिन उन्होंने केवल एक प्रयोग नहीं देखा था, बल्कि जीवन का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत समझा था। उन्होंने निश्चय किया कि वे अपनी पढ़ाई और अपने सपनों के प्रति पूरी एकाग्रता से कार्य करेंगी।

समय बीतता गया। वेल्लारमथी ने अपने संकल्प को कभी कमजोर नहीं पड़ने दिया। उन्होंने कठिन परिस्थितियों में भी अपने लक्ष्य से ध्यान नहीं हटाया। पढ़ाई के दौरान अनेक चुनौतियाँ आईं, लेकिन उन्होंने हमेशा उसी शिक्षा को याद रखा जो उन्हें बचपन में मिली थी। उन्होंने अपने मन को बिखरने नहीं दिया और लगातार ज्ञान अर्जित करती रहीं।

उनकी मेहनत, लगन और एकाग्रता का परिणाम यह हुआ कि वे भारत के प्रतिष्ठित अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, इसरो से जुड़ गईं। यह उनके जीवन की एक बड़ी उपलब्धि थी। लेकिन उनकी यात्रा यहीं समाप्त नहीं हुई। उन्होंने अपनी प्रतिभा और समर्पण से अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वे आरआईएसएटी-1 उपग्रह की पहली महिला परियोजना निदेशक बनीं। यह उपलब्धि केवल उनके लिए ही नहीं, बल्कि पूरे देश की महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी।

वेल्लारमथी की पहचान केवल एक वैज्ञानिक के रूप में ही नहीं थी। वे सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र, श्रीहरिकोटा से प्रक्षेपित होने वाले रॉकेटों की उल्टी गिनती की आवाज़ भी देती थीं। उनकी स्पष्ट और आत्मविश्वास से भरी आवाज़ पूरे देश में पहचानी जाने लगी। इसी कारण लोग उन्हें प्रेम से “इसरो की आवाज़” कहने लगे।

जब भी कोई रॉकेट अंतरिक्ष की ओर उड़ान भरता, उसके पीछे हजारों वैज्ञानिकों की मेहनत होती थी। लेकिन उस ऐतिहासिक क्षण में सुनाई देने वाली वेल्लारमथी की आवाज़ देशवासियों के मन में उत्साह और गर्व भर देती थी। उनकी सफलता यह सिद्ध करती है कि बचपन में सीखी गई एक छोटी-सी सीख भी जीवन की दिशा बदल सकती है।

आज के समय में जब मोबाइल फोन, सोशल मीडिया और अनेक प्रकार के आकर्षण लोगों का ध्यान लगातार भटकाते रहते हैं, तब एकाग्रता का महत्व और भी बढ़ जाता है। बहुत से लोग प्रतिभाशाली होते हुए भी इसलिए पीछे रह जाते हैं क्योंकि उनका मन स्थिर नहीं रह पाता। वे एक काम शुरू करते हैं और थोड़ी देर बाद किसी दूसरे काम में लग जाते हैं। परिणामस्वरूप उनकी ऊर्जा बिखर जाती है। इसके विपरीत जो व्यक्ति एक समय में एक लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करता है, वह धीरे-धीरे असाधारण उपलब्धियाँ प्राप्त करने लगता है।

एकाग्रता कोई जन्मजात गुण नहीं है। इसे अभ्यास के माध्यम से विकसित किया जा सकता है। नियमित अध्ययन, अनुशासित दिनचर्या, ध्यान, सकारात्मक सोच और लक्ष्य के प्रति स्पष्ट दृष्टि मन को केंद्रित बनाने में सहायता करते हैं। जब व्यक्ति अपने समय और ऊर्जा का सही उपयोग करना सीख लेता है, तब सफलता उसके कदम चूमने लगती है।

नन्ही वेल्लारमथी की कहानी हमें यही संदेश देती है कि महान उपलब्धियों की शुरुआत छोटे-छोटे विचारों और सीखों से होती है। जिस प्रकार केंद्रित सूर्य किरणें कागज़ को जला सकती हैं, उसी प्रकार एकाग्र मन जीवन की हर बाधा को पार कर सकता है। यदि हम अपने लक्ष्य पर अटल रहें, अपनी शक्ति को बिखरने न दें और निरंतर प्रयास करते रहें, तो कोई भी सपना इतना बड़ा नहीं होगा जिसे हम पूरा न कर सकें। सफलता का रहस्य किसी जादू में नहीं, बल्कि एकाग्रता, परिश्रम और दृढ़ संकल्प में छिपा है। यही वह शक्ति है जो साधारण लोगों को असाधारण बनाती है और उन्हें इतिहास के पन्नों में अमर कर देती है।

चीन-अमेरिका नहीं भारत बना रहा पेरिस से भी 5 गुना बड़ा रिन्यूएबल एनर्जी पार्क, क्या है अडानी का दुनिया हिलाने वाला मेगा प्लान?

30 जुलाई 2012 की दोपहर 2 बजकर 35 मिनट पर भारत के नॉर्दर्न ग्रिड पर अचानक लोड बढ़ा। ग्रिड इस दबाव को झेल नहीं पाया और देखते ही देखते ईस्टर्न और नॉर्थ-ईस्टर्न ग्रिड भी ताश के पत्तों की तरह ढह गए। परिणाम यह हुआ कि देश के 22 राज्यों की बिजली गुल हो गई। अस्पतालों के ऑपरेशन थिएटर बंद होने लगे, वेंटिलेटर जनरेटर बैकअप पर आ गए और झुलसाती गर्मी में करोड़ों लोग पसीने से तर-बतर हो गए। इस ब्लैकआउट का सबसे डरावना पहलू था पश्चिम बंगाल और झारखंड के कोल-बेल्ट (Coal Belts) में हुआ हादसा। जैसे ही बिजली कटी, खदानों के लिफ्ट और वेंटिलेशन सिस्टम (हवा फेंकने वाले पंखे) बंद हो गए। 200 से अधिक मजदूर जमीन के सैकड़ों मीटर नीचे घने अंधेरे और बिना ऑक्सीजन के फंस गए। उन्हें सुरक्षित बाहर निकालने में प्रशासन के 8 घंटे से पसीने छूट गए थे। आर्थिक मोर्चे पर इस ब्लैकआउट ने भारत की साख को वैश्विक स्तर पर चोट पहुंचाई। सिर्फ एक दिन की ठप पड़ी मैन्युफैक्चरिंग और लॉजिस्टिक्स से देश को 1000 करोड़ का नुकसान हुआ। दलाल स्ट्रीट (शेयर बाजार) में भगदड़ मच गई। मार्केट 2% से ज्यादा नीचे आ चुका था। नियमों के मुताबिक, यदि बाजार 10% तक गिर जाता, तो लोअर सर्किट लग जाता और उस दिन के लिए ट्रेडिंग पूरी तरह बंद करनी पड़ती। यह सोचना गलत होगा कि पावर ग्रिड या एनर्जी क्राइसिस सिर्फ विकासशील देशों की समस्या है। साल 2022 में दुनिया ने इसका सबसे बड़ा सबूत देखा। रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध छिड़ते ही जैसे ही जर्मनी की गैस और पावर सप्लाई बाधित हुई, वहां की अर्थव्यवस्था चरमरा गई। यूरोप की सबसे मजबूत आर्थिक महाशक्ति कहे जाने वाले जर्मनी में एक ही साल के भीतर करीब 24,000 कंपनियों को खुद को दिवालिया घोषित करना पड़ा। 2012 का भारतीय ब्लैकआउट और 2022 का जर्मन एनर्जी क्राइसिस हमें एक ही सबक सिखाते हैं। आधुनिक दुनिया में युद्ध टैंकों या मिसाइलों से नहीं, बल्कि किसी देश की पावर ग्रिड को ठप करके भी जीता जा सकता है। ऊर्जा सुरक्षा ही असल में किसी देश की सबसे बड़ी संप्रभुता है। जर्मनी G7 का इकलौता देश बन गया जहां पर दो रिसेशंस आए। जबकि जर्मनी के पास तो बहुत सारा पैसा था। क्योंकि पैसा जिसे हम रियल करेंसी समझते हैं। असल में बस एक अकाउंटिंग सिस्टम है। असली करेंसी एनर्जी होती है जो रियल ट्रांसफॉर्मेशन लाती है। भारत भी इस बात को भलि भांति समझ चुका है और भारत के गुजरात में स्थित कच्छ का विशाल रण, एक ऐसा क्षेत्र जिसे कभी बंजर और अनुपयोगी माना जाता था। आज दुनिया के सबसे बड़े रिन्यूएबल एनर्जी प्रोजेक्ट्स में बदल रहा है। करीब 1.5 लाख करोड़ के निवेश, हजारों मेगावाट क्षमता, विशाल सोलर पार्क, पवन ऊर्जा संयंत्र, बैटरी स्टोरेज सिस्टम और रणनीतिक महत्व के कारण खावड़ा प्रोजेक्ट पूरी दुनिया का ध्यान अपनी ओर खींच रहा है। लेकिन क्या यह सिर्फ एक ग्रीन एनर्जी प्रोजेक्ट है? या इसके पीछे भारत की ऊर्जा सुरक्षा, आर्थिक विकास और भू-राजनीतिक रणनीति की भी बड़ी कहानी छिपी हुई है? आइए इस मेगा प्रोजेक्ट का आज एमआरआई स्कैन करते हैं। जरा सोचिए 1.5 लाख करोड़। यह कोई मामूली आंकड़ा नहीं है। यह भारत के ग्रीन एनर्जी ट्रांजिशन पर लगाया गया अब तक का सबसे बड़ा दांव है। इस भारीभरकम निवेश का सिर्फ एक ही सीधा लक्ष्य है साल 2030 तक इस पार्क की कुल उत्पादन क्षमता को 30 गीगावाट यानी 300 मेगावाट तक पहुंचाना। यह सिर्फ एक एनर्जी पार्क नहीं बन रहा है बल्कि पूरा का पूरा एक नया ऊर्जा पारिस्थितिकी तंत्र तैयार हो रहा है। इस प्रोजेक्ट का आकार हैरान कर देने वाला है। यह 72,600 हेक्टेयर यानी लगभग 726 वर्ग किमी की बंजर और खारी जमीन पर फैला है। इसका मतलब है कि यह पेरिस शहर से भी बड़ा है। जब यह पूरी क्षमता पर काम करेगा तो हर साल लगभग 81 बिलियन किलोवाट घंटा साफ बिजली पैदा करेगा। इसे थोड़ा आसान भाषा में समझे तो यह बिजली इतनी ज्यादा है कि चिली या नीदरलैंड जैसे पूरे के पूरे देश सिर्फ इसी से रोशन हो सकते हैं। भारत के संदर्भ में बात करें तो इससे 6 से 1.8 करोड़ भारतीय घरों को लगातार बिजली मिल सकेगी। अब जाहिर सी बात है इतने विशाल प्रोजेक्ट को कोई एक कंपनी अकेले नहीं संभाल सकती। इसलिए यहां एक बहुत ही दिलचस्प मल्टी डेवलपर मॉडल अपनाया गया है। इसमें अडानी ग्रीन एनर्जी को सबसे बड़ा यानी 19,000 हेक्टेयर का हिस्सा मिला है। लेकिन वह अकेले नहीं है। एनटीपीसी और जीएसएल जैसी बड़ी सरकारी कंपनियों की भी इसमें भारी हिस्सेदारी है।

अदाणी ग्रुप खावड़ा में दुनिया का सबसे बड़ा रिन्यूएबल एनर्जी पार्क विकसित कर रहा है। करण अदाणी ने भरोसा दिलाया कि साल 2030 तक इसकी पूरी 37 गीगावाट क्षमता को शुरू कर दिया जाएगा। उन्होंने इसे केवल एक प्रोजेक्ट नहीं, बल्कि दुनिया के लिए भारत का एक स्टेटमेंट बताया कि विकास और पर्यावरण की सुरक्षा साथ-साथ चल सकते हैं। अर्थव्यवस्था की बात करें तो यहां 15200 से अधिक सीधे रोजगार पैदा हुए हैं। जहां कभी इंसानों का रहना मुश्किल था। आज वहां 500 से अधिक मजदूरों के लिए एयर कंडीशन कॉलोनियां बसाई गई हैं। एक हाईटेक क्लाउड किचन रोजाना 1 लाख पौष्टिक भोजन तैयार कर रहा है। यह सिर्फ एक पावर प्लांट नहीं अपने आप में एक नई अर्थव्यवस्था बन गया है। इस पूरे प्रोजेक्ट को सुरक्षित और सफल बनाने के लिए रिसर्च रिपोर्ट में कुछ स्पष्ट रणनीतिक सिफारिशें दी गई हैं। पहला एक सिविल मिलिट्री कोऑर्डिनेशन विंग बनाई जाए ताकि विकास और राष्ट्रीय सुरक्षा के बीच कोई टकराव ना हो। दूसरा जो भी ट्रांसमिशन लाइनें बन रही हैं उन्हें हर हाल में दिसंबर 2026 और 2027 की डेडलाइन तक पूरा किया जाए। वरना यह बिजली किसी काम की नहीं रहेगी।

अभियान

तीन रातों का मौन, चौथे दिन का चमत्कार: जब पूरी दुनिया की नजरें टिक जाती हैं कामाख्या धाम पर

भारत की आध्यात्मिक परंपराएं जितनी प्राचीन हैं, उतनी ही रहस्यमयी भी हैं। यहां ऐसे अनेक तीर्थस्थल हैं जिनकी मान्यताएं केवल धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे जीवन, प्रकृति और ब्रह्मांड के गहरे रहस्यों को भी अपने भीतर समेटे हुए हैं। इन्हीं अद्भुत स्थलों में एक नाम सबसे अलग और विशिष्ट है—मां कामाख्या का पवित्र धाम। असम की राजधानी गुवाहाटी में नीलाचल पर्वत पर स्थित यह मंदिर केवल एक धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि शक्ति, सृजन और प्रकृति के शाश्वत संबंध का जीवंत प्रतीक माना जाता है। वर्ष भर यहां श्रद्धालुओं का आना-जाना लगा रहता है, लेकिन जून का महीना आते ही यह स्थान पूरी दुनिया के आध्यात्मिक मानचित्र पर विशेष महत्व प्राप्त कर लेता है। इसका कारण है अंबुबाची मेला, जिसे भारत के सबसे रहस्यमय और अनूठे धार्मिक आयोजनों में गिना जाता है।

जब देश के अधिकांश मंदिरों में विशेष पर्वों पर पूजा-पाठ और धार्मिक अनुष्ठानों की संख्या बढ़ जाती है, तब कामाख्या मंदिर में ठीक इसके विपरीत होता है। यहां तीन दिनों के लिए मंदिर के कपाट बंद कर दिए जाते हैं। न आरती होती है, न दर्शन होते हैं और न ही कोई नियमित पूजा संपन्न होती है। यह परंपरा सदियों से चली आ रही है और इसके पीछे ऐसी धार्मिक मान्यता जुड़ी हुई है जिसने कामाख्या धाम को समस्त शक्तिपीठों में सबसे अलग पहचान दी है।

पौराणिक कथाओं के अनुसार जब राजा दक्ष ने विशाल यज्ञ का आयोजन किया और उसमें भगवान शिव का अपमान किया, तब उनकी पुत्री माता सती ने अपमान सहन न कर पाने के कारण यज्ञ कुंड में अपने प्राण त्याग दिए। यह घटना केवल एक पारिवारिक त्रासदी नहीं थी, बल्कि ब्रह्मांडीय संतुलन को प्रभावित करने वाली घटना बन गई। भगवान शिव माता सती के वियोग में इतने व्यथित हुए कि उन्होंने उनके पार्थिव शरीर को कंधे पर उठाकर तांडव आरंभ कर दिया। उनके क्रोध और शोक से संपूर्ण सृष्टि संकट में पड़ गई। तब भगवान विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र से माता सती के शरीर के विभिन्न अंगों को पृथ्वी के अलग-अलग स्थानों पर गिराया। जहां-जहां उनके अंग गिरे, वहां शक्तिपीठों की स्थापना हुई। माना जाता है कि नीलाचल पर्वत पर माता सती का योनिभाग गिरा था। इसी कारण यह स्थान देवी शक्ति की मूल सृजन ऊर्जा का केंद्र माना जाता है। यही कारण है कि यहां देवी की प्रतिमा स्थापित नहीं है। गर्भगृह में स्थित प्राकृतिक शिला की पूजा की जाती है, जो सृष्टि की मूल शक्ति का प्रतीक मानी जाती है। कामाख्या मंदिर की यह विशेषता उसे अन्य शक्तिपीठों से अलग बनाती है। यहां देवी को केवल शक्ति के रूप में नहीं, बल्कि सृजन और मातृत्व की सर्वोच्च अभिव्यक्ति के रूप में पूजा जाता है। भारतीय दर्शन में स्त्री को सृष्टि की आधारशिला माना गया है और कामाख्या धाम इसी विचार को प्रत्यक्ष रूप से प्रस्तुत करता है। अंबुबाची मेले का संबंध भी इसी सृजन शक्ति से जुड़ा हुआ है। धार्मिक मान्यता है कि वर्ष में एक बार आषाढ़ मास के दौरान मां कामाख्या रजस्वला होती हैं। यह अवधि तीन दिनों तक रहती है। इन दिनों को देवी के विश्राम काल के रूप में माना जाता है। इसलिए मंदिर के मुख्य कपाट बंद कर दिए जाते हैं और किसी भी प्रकार की पूजा-अर्चना नहीं होती। यह परंपरा दुनिया की उन दुर्लभ धार्मिक मान्यताओं में से एक है जहां स्त्री की जैविक प्रक्रिया को पवित्रता और सम्मान के साथ स्वीकार किया जाता है।

अनेक विद्वान इस परंपरा को भारतीय संस्कृति की गहरी संवेदनशीलता का प्रतीक मानते हैं। जहां दुनिया के कई हिस्सों में मासिक धर्म को लंबे समय तक सामाजिक वर्जनाओं से जोड़ा गया, वहीं कामाख्या धाम में इसे देवी शक्ति के उत्सव के रूप में देखा जाता है। यह संदेश देता है कि सृजन की प्रक्रिया स्वयं में पवित्र है और उसका सम्मान किया जाना चाहिए।

वर्ष 2026 में अंबुबाची मेला 22 जून से प्रारंभ होकर 26 जून तक आयोजित हो रहा है। इन दिनों में लाखों श्रद्धालु, साधु-संत, तांत्रिक और पर्यटक गुवाहाटी पहुंचते हैं। मंदिर के आसपास का पूरा क्षेत्र आध्यात्मिक ऊर्जा और धार्मिक उत्साह से भर जाता है। देश के विभिन्न राज्यों से ही नहीं, बल्कि नेपाल, बांग्लादेश, भूटान और अन्य देशों से भी श्रद्धालु यहां आते हैं।

मंदिर बंद होने के बावजूद भक्तों की भीड़ कम नहीं होती। लोग घंटों और कई बार दिनों तक प्रतीक्षा करते हैं ताकि चौथे दिन मंदिर खुलने पर सबसे पहले मां के दर्शन कर सकें। चौथे दिन विशेष शुद्धिकरण अनुष्ठान संपन्न होता है और उसके बाद मंदिर के कपाट श्रद्धालुओं के लिए खोल दिए जाते हैं। यह क्षण लाखों लोगों के लिए अत्यंत भावुक और पवित्र माना जाता है।

अंबुबाची मेले का सबसे बड़ा रहस्य उस सफेद वस्त्र से जुड़ा हुआ है जिसे मंदिर बंद होने से पहले गर्भगृह में रखा जाता है। मान्यता है कि जब तीन दिनों बाद मंदिर के द्वार खुलते हैं, तो यह वस्त्र लाल रंग में परिवर्तित हो चुका होता है। इसी वस्त्र के छोटे-छोटे टुकड़ों को प्रसाद स्वरूप श्रद्धालुओं को दिया जाता है। इसे अंगवस्त्र कहा जाता है और भक्त इसे देवी की विशेष कृपा का प्रतीक मानते हैं। कई श्रद्धालु इस प्रसाद को अपने घरों में सुरक्षित रखते हैं। उनका विश्वास है कि इससे घर में सुख-समृद्धि आती है, नकारात्मक शक्तियों से रक्षा होती है और मां कामाख्या का आशीर्वाद बना रहता है। यही कारण है कि इस प्रसाद को प्राप्त करना अत्यंत शुभ माना जाता है। कामाख्या धाम की पहचान केवल एक शक्तिपीठ के रूप में ही नहीं, बल्कि तंत्र साधना के सबसे बड़े केंद्र के रूप में भी है। भारत की प्राचीन तांत्रिक परंपराओं का महत्वपूर्ण केंद्र यही क्षेत्र माना जाता है। अंबुबाची मेले के दौरान हजारों तांत्रिक साधक यहां एकत्रित होते हैं। इन दिनों अनेक विशेष साधनाएं, जप, तप और आध्यात्मिक अनुष्ठान संपन्न किए जाते हैं।

मेला परिसर में अनेक ऐसे साधु दिखाई देते हैं जो वर्ष भर एकांत साधना में लीन रहते हैं और केवल अंबुबाची मेले के समय ही सार्वजनिक रूप से दर्शन देते हैं। यही कारण है कि यह आयोजन साधकों और आध्यात्मिक जिज्ञासुओं के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र बन जाता है।

नीलाचल पर्वत पर इन दिनों का वातावरण सामान्य दिनों से बिल्कुल अलग होता है। हर ओर मंत्रोच्चार की ध्वनि सुनाई देती है। धूप, दीप, हवन और साधना की सुगंध वातावरण को आध्यात्मिक बना देती है। लाखों लोगों की भीड़ के बावजूद यहां एक अद्भुत शांति और श्रद्धा का अनुभव होता है। ऐसा लगता है मानो पूरा पर्वत स्वयं देवी शक्ति की उपस्थिति से आलोकित हो उठा हो। अंबुबाची मेले का संबंध केवल धार्मिक आस्था से नहीं, बल्कि प्रकृति के चक्र से भी जोड़ा जाता है। प्राचीन भारतीय कृषि परंपरा में यह माना जाता था कि वर्षा ऋतु के आगमन के साथ धरती नई उर्वरता प्राप्त करती है। जिस प्रकार स्त्री जीवन को जन्म देने की क्षमता रखती है, उसी प्रकार धरती भी बीजों को अंकुरित कर नए जीवन का सृजन करती है। इसलिए इस पर्व को धरती माता और देवी शक्ति दोनों के नवसृजन काल का प्रतीक माना जाता है।

यह दर्शन भारतीय संस्कृति की उस सोच को दर्शाता है जिसमें प्रकृति और मानव जीवन को अलग-अलग नहीं देखा जाता, बल्कि एक ही व्यापक व्यवस्था का हिस्सा माना जाता है। कामाख्या धाम इसी गहन आध्यात्मिक दृष्टि का जीवंत उदाहरण है।

आधुनिक युग में जब लोग वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तर्क को महत्व देते हैं, तब भी कामाख्या मंदिर का आकर्षण कम नहीं हुआ है। बल्कि हर वर्ष यहां आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ती जा रही है। इसका कारण केवल चमत्कारों में विश्वास नहीं है, बल्कि वह सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत भी है जो इस मंदिर से जुड़ी हुई है। यहां आने वाला व्यक्ति केवल दर्शन ही नहीं करता, बल्कि भारतीय सभ्यता की हजारों वर्षों पुरानी आध्यात्मिक परंपरा का अनुभव भी करता है। कामाख्या धाम हमें यह सिखाता है कि शक्ति केवल बाहरी सामर्थ्य का नाम नहीं है। वास्तविक शक्ति सृजन की क्षमता में निहित होती है। यही शक्ति जीवन को जन्म देती है, उसका पालन करती है और आवश्यकता पड़ने पर उसकी रक्षा भी करती है। मां कामाख्या इसी शक्ति का प्रतीक हैं। जब अंबुबाची मेले के दौरान तीन दिनों के लिए मंदिर के द्वार बंद होते हैं, तब यह केवल एक धार्मिक रस्म नहीं होती। यह उस सनातन विचार का उत्सव होता है जो नारीत्व, मातृत्व और सृजन को सर्वोच्च स्थान देता है। चौथे दिन जब मंदिर के कपाट खुलते हैं, तो वह केवल एक मंदिर का उद्घाटन नहीं होता, बल्कि शक्ति के पुनः प्रकट होने का उत्सव बन जाता है।

इसीलिए कामाख्या धाम आज भी करोड़ों लोगों की आस्था का केंद्र बना हुआ है। यहां आने वाला हर श्रद्धालु अपने साथ केवल प्रसाद नहीं ले जाता, बल्कि वह एक ऐसी अनुभूति लेकर लौटता है जो उसे जीवन, प्रकृति और दिव्य शक्ति के गहरे संबंध का एहसास कराती है।

PRGI NO. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, “Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HARDIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, “Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmdabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

अब 8000 से अधिक जीएसआरटीसी बसों में क्यूआर कोड पर आधारित फीडबैक सिस्टम लागू, यात्रियों से मिला शानदार फीडबैक

▸▸ जीएसआरटीसी को यात्रियों से मिली जोरदार प्रतिक्रिया, औसत रेटिंग 4.7 स्टार तक पहुंचा

▸▸ मार्च से जून 2026 के दौरान 3.13 लाख से अधिक यात्रियों की फीडबैक रिपोर्ट मिली

▸▸ उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी के नेतृत्व में गुजरात की सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था में उल्लेखनीय परिवर्तन आया, जिसमें यात्रियों की सुविधा, सुरक्षा और सेवा को केंद्र में रखा गया है

गांधीनगर : गुजरात राज्य सड़क परिवहन निगम (जीएसआरटीसी) ने मार्च 2025 में ट्रायल आधार पर क्यूआर-कोड आधारित यात्री फीडबैक सिस्टम शुरू किया था, जिसे अब राज्यभर में बड़े पैमाने पर लागू किया जा रहा है। इस पहल को लाखों यात्रियों का उत्साहजनक फीडबैक मिला है, और 5 में से 4.7 स्टार की औसत संतोषजनक रेटिंग मिली है।

उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी के मार्गदर्शन में राज्य की सार्वजनिक परिवहन सेवाओं में व्यापक सुधार किए गए हैं, जिनमें यात्रियों की सुविधा, सुरक्षा और सेवा की गुणवत्ता को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है।

राज्य संचालित बस सेवाओं में यात्रियों को अधिक सुरक्षित, आरामदायक और गुणवत्तापूर्ण यात्रा का अनुभव देने के उद्देश्य से यह फीडबैक सिस्टम शुरू किया था। यात्री अपनी यात्रा के दौरान क्यूआर कोड को स्कैन करके सीधे अपने मोबाइल फोन के जरिए फीडबैक दे सकते हैं। यात्री किसी भी सेवा को लेकर अपनी शिकायत भी बता सकते हैं।

शुरुआत में इस डिजिटल व्यवस्था को केवल प्रीमियम लग्जरी बसों में लागू किया गया था। लेकिन, इसे अच्छी प्रतिक्रिया मिलने पर अब जीएसआरटीसी ने इसे व्यापक स्तर पर लागू किया है। आज, राज्य के 125 बस स्टेशन, डिपो कंट्रोल पॉइंट्स तथा 8000 से अधिक बसों में क्यूआर कोड लग चुके हैं।

इस सिस्टम के जरिए प्राप्त प्रतिक्रिया के अनुसार यात्रियों ने जीएसआरटीसी की सेवाओं पर बहुत अधिक संतुष्टि जाहिर की है। पांच स्टार के मापदंड पर दी गई रेटिंग्स दिखाती है कि यात्री सेवा के विभिन्न मानदंडों को लेकर खुश हैं और निगम की ओर से यात्रा के अनुभव को और भी बेहतर बनाने के लिए किए गए प्रयासों को सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली है। जीएसआरटीसी की 1 मार्च से 19 जून, 2026 तक की पैसेंजर फीडबैक रिपोर्ट के अनुसार निगम ने 5 में से 4.7 स्टार की मजबूत यात्री संतुष्टि रेटिंग प्राप्त की है। यह रिपोर्ट 3,13,824 यात्रियों से प्राप्त फीडबैक पर आधारित है, जो दिखाती है कि यात्री विभिन्न कामकाज के पैमानों पर निगम की सेवाओं के प्रति बहुत अधिक संतुष्ट हैं।

सुझावों और शिकायतों पर त्वरित कार्रवाई

उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी ने कहा, "जीएसआरटीसी केवल फीडबैक एकत्र नहीं करता, बल्कि उसके आधार पर सक्रिय रूप से कार्रवाई भी करता है। यात्रियों द्वारा भेजी जाने वाली शिकायतों, सुझावों और मुद्दों को तत्काल संबंधित विभागों और स्थानीय बस डिपो तक पहुंचाया जाता है। प्राप्त प्रतिक्रिया की अविलंब जांच की जाती है और आवश्यक सुधारात्मक कदम स्थल पर ही उठाए जाते हैं। हम यात्रियों को बेहतरीन बेहतरीन सार्वजनिक परिवहन सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए कृतसंकल्प हैं।"

जीएसआरटीसी के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि यात्रियों का फीडबैक निगम की सतत प्रगति के लिए एक महत्वपूर्ण साधन है और निगम पूरे गुजरात में सुरक्षित, विश्वसनीय और यात्री-अनुकूल परिवहन सेवाएं प्रदान करे के लिए प्रतिबद्ध है।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर अहमदाबाद मंडल की अनूठी पहल

रेलवे इंस्टीट्यूट और सामुदायिक भवनों के साथ-साथ 4 वंदे भारत ट्रेनों में होगा 'योग'

पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल द्वारा 21 जून 2026 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस-2026 के अवसर पर मंडल के विभिन्न प्रमुख स्थलों तथा चार वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेनों में व्यापक स्तर पर योग सत्रों का आयोजन किया जा रहा है। इस वर्ष का आयोजन न केवल रेलवे परिसरों में बल्कि चलती ट्रेनों में भी यात्रियों को स्वास्थ्य, संतुलित जीवनशैली और समग्र कल्याण के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से किया जा रहा है।

मंडल रेल प्रबंधक श्री वेद प्रकाश के कुशल मार्गदर्शन में आयोजित होने वाले इन कार्यक्रमों के अंतर्गत मुख्य योग सत्र निम्नलिखित प्रमुख स्थलों पर आयोजित किए जाएंगे—

▸▸ सामुदायिक भवन, साबरमती
▸▸ ओल्ड रेलवे इंस्टीट्यूट, साबरमती
▸▸ रेलवे इंस्टीट्यूट, कांकरिया
▸▸ सामुदायिक भवन, गांधीधाम
▸▸ सामुदायिक भवन, वीरमगाम
▸▸ चलती 'वंदे भारत' एक्सप्रेस ट्रेनों में अनूठी पहल

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस को और अधिक व्यापक एवं जनसुलभ बनाने के उद्देश्य से अहमदाबाद मंडल द्वारा चार प्रतिष्ठित वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेनों में भी विशेष योग सत्र आयोजित किए जाएंगे। इन ट्रेनों में यात्रा कर रहे यात्री योग प्रशिक्षकों के मार्गदर्शन में सीट पर बैठकर किए जाने वाले सरल योगाभ्यास एवं प्राणायाम का अभ्यास कर सकेंगे। इन ट्रेनों का विवरण निम्नानुसार है—

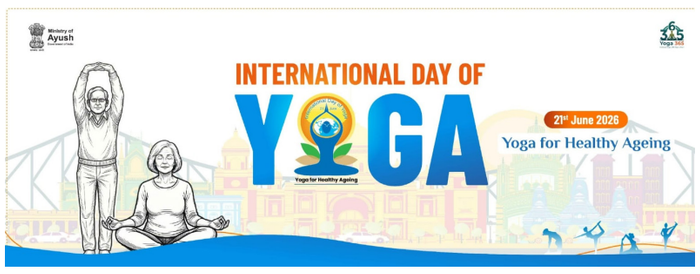

▸▸ गाड़ी संख्या 20902 गांधीनगर कैपिटल – मुंबई सेंट्रल वंदे भारत एक्सप्रेस
▸▸ गाड़ी संख्या 12462 साबरमती – जोधपुर वंदे भारत एक्सप्रेस
▸▸ गाड़ी संख्या 26964 असारवा – उदयपुर वंदे भारत एक्सप्रेस
▸▸ गाड़ी संख्या 22925 अहमदाबाद – ओखा वंदे भारत एक्सप्रेस

अहमदाबाद मंडल द्वारा पूर्व में भी अहमदाबाद, महेसाणा, पालनपुर तथा गांधीधाम सहित विभिन्न प्रमुख स्टेशनों पर योग अभ्यास शिविरों का सफल आयोजन किया जा चुका है, जिसमें रेल कर्मचारियों एवं यात्रियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया था।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस-2026 की थीम "Yoga for Healthy Ageing" के अनुरूप पश्चिम रेलवे का अहमदाबाद मंडल स्वस्थ जीवनशैली और सामूहिक कल्याण के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने के लिए प्रतिबद्ध है।

पश्चिम रेलवे अपने सभी सम्मानित रेल यात्रियों एवं रेल कर्मियों से अपील करता है कि वे इन योग सत्रों में सहभागिता कर स्वस्थ जीवन की दिशा में कदम बढ़ाएं तथा इस वैश्विक अभियान का हिस्सा बनें।

एआई द्वारा तैयार किए गए प्रश्न पत्र में केवल उत्तर ही छपे थे, जिसके चलते राजस्थान विश्वविद्यालय ने परीक्षा रद्द कर दी

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। राजस्थान विश्वविद्यालय ने बुधवार, 17 जून को समाजशास्त्र विभाग की द्वितीय सेमेस्टर की परीक्षा रद्द कर दी। छात्रों का आरोप था कि उन्हें कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) की मदद से तैयार किया गया प्रश्न पत्र दिया गया था, जिसमें प्रश्नों के स्थान पर पहले से लिखे हुए उत्तर थे। "भारतीय समाज" विषय की यह परीक्षा पीजी स्कूल ऑफ ह्यूमैनिटीज में दोपहर 3 बजे से शाम 6 बजे तक होनी थी।

छात्रों ने बताया कि जैसे ही उन्हें प्रश्नपत्र मिला, उन्हें पता चला कि उसमें न तो प्रश्न थे और न ही बहुविकल्पीय प्रश्न। परीक्षा दे रहे छात्र विकास कुमार बैरवा ने आरोप लगाया कि आपत्ति उठाए जाने के बाद परीक्षा हॉल में मौजूद अधिकारियों ने तुरंत प्रश्नपत्र वापस ले लिए। उन्होंने कहा, "प्रशासन ने सभी प्रश्नपत्र वापस ले लिए और छात्रों को बाहर इस मामले पर चर्चा न करने के लिए कहा गया। बाद में हमें केवल इतना बताया गया कि परीक्षा अब 27 जून को होगी।" इस घटना के बाद, छात्रों का एक समूह विश्वविद्यालय प्रशासन भवन के बाहर इकट्ठा हुआ और मामले पर स्पष्टीकरण की मांग की।

एनएसयूआई के पदाधिकारी मनीष मेघवंशी ने बताया कि समाजशास्त्र विभाग के द्वितीय सेमेस्टर की परीक्षा मंगलवार को शुरू होने से पहले ही छात्रों ने प्रश्न पत्रों में गंभीर त्रुटि देखकर उन्हें वापस कर दिया और परीक्षा स्थगित कर दी गई। यह त्रुटि छात्रों के लिए बेहद चौंकाने वाली है। आरोप है कि प्रश्न पत्र कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) की मदद से तैयार किए गए हैं।

भाजपा की प्राथमिकता स्कूल-अस्पताल नहीं बल्कि फाइव स्टार कमलम बनाने की है: मनोज सोरठिया, प्रदेश संगठन महामंत्री AAP

▸▸ भाजपा का कमलम गुजरात में हुई लूट और गुलामी का प्रतीक है: मनोज सोरठिया

▸▸ 5 वर्षों में भाजपा ने 100 करोड़ के कमलम बनाए: मनोज सोरठिया

▸▸ अब लोग ही सवाल पूछ रहे हैं कि 30 वर्षों में गुजरात के लोगों का क्या विकास हुआ?: मनोज सोरठिया

▸▸ 30 वर्षों में गुजरात के लोगों को अच्छी शिक्षा और स्वास्थ्य व्यवस्था मिली?: मनोज सोरठिया

▸▸ 30 वर्षों के शासन के बाद गुजरात के किसानों को पर्याप्त भाव और पर्याप्त खाद मिलती है?: मनोज सोरठिया

▸▸ 30 वर्षों के शासन में गुजरात के लोग पायमाल हुए हैं: मनोज सोरठिया

अहमदाबाद/सूरत/गुजरात: आम आदमी पार्टी के प्रदेश संगठन महामंत्री मनोज सोरठिया ने वीडियो के माध्यम से कहा कि आज भाजपा के 30 वर्षों के शासन के बाद गुजरात के लोग एक सवाल पूछ रहे हैं कि क्या इन 30 वर्षों में गुजरात के लोगों का विकास हुआ है? क्या गुजरात के लोगों के लिए शिक्षा व्यवस्था फाइव स्टार स्तर की बनी है? क्या गुजरात के लोगों को अच्छे सरकारी अस्पताल और अच्छी स्वास्थ्य सुविधाएं मिलती हैं? क्या गुजरात का किसान समृद्ध हुआ है? क्या गुजरात के किसानों को अपनी फसल का उचित मूल्य मिलता है? क्या उन्हें पर्याप्त खाद मिलती है? उनकी आजीविका के लिए सरकार ने इन 30 वर्षों में क्या किया है? क्या गुजरात का छोटा व्यापारी आज की परिस्थिति में अपना रोजगार-धंधा अच्छी तरह चला सकता है? क्या इन 30 वर्षों में गुजरात के लोग लाभ में रहे हैं? आज गुजरात के प्रत्येक व्यक्ति पर ऋण और किस्तें चुकाने का दबाव है। सभी मकान, सभी गाड़ियां और सभी छोटे-बड़े व्यवसाय आज ऋण पर चल रहे हैं। ऐसे समय में भारतीय जनता पार्टी की प्राथमिकता देखिए। 'आप' नेता मनोज सोरठिया ने आगे कहा कि भाजपा की प्राथमिकता अपने फाइव स्टार कमलम बनाने की है। यह कमलम आज गुजरात को गौरव की ओर नहीं बल्कि गुलामी की ओर धकेल रहा है। भारतीय जनता पार्टी ने पिछले 30 वर्षों में गुजरात को लूटकर अपनी बादशाहत स्थापित की है। मानो अपना फरमान चला रही हो और लोगों से कह रही हो कि हमने तुम्हें गुलाम बना दिया है। आज गुजरात की ऐसी स्थिति है। पिछले पांच वर्षों में भाजपा ने 100 करोड़ रुपये से अधिक खर्च करके बड़े फाइव स्टार कार्यालय बनाए हैं। भाजपा अपने संगठन को मजबूत करने और अपनी जड़ों को मजबूत करने के लिए करोड़ों रुपये खर्च करती है, लेकिन लोगों की सुख-सुविधा के लिए, लोगों के कल्याण के लिए और लोगों की मूलभूत आवश्यकताओं के लिए कोई काम नहीं किया है। आज मैं गुजरात की जनता से अनुरोध करता हूं कि अब इस भाजपा को पहचानने की जरूरत है। यह भाजपा आधुनिक तानाशाह है। तानाशाहों से भी अधिक बुरी तरह गुजरात की जनता का शोषण करने वाले लोग भारतीय जनता पार्टी में बैठे हैं। गुजरात की जनता से मेरी विनती है कि भाजपा के दुष्कर्मों को पहचानिए, भाजपा की लूट को पहचानिए और भाजपा ने हमें जिस गुलामी की ओर धकेला है, उस गुलामी को पहचानिए।

नासिरनगर विध्वंस के 20 दिन बाद भी रहस्य बना हुआ है पीड़ितों पर धमकी देकर हस्ताक्षर करवाने का आरोप है

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। सूरत के नासिर नगर में 30 मई को हुई रहस्यमय तोड़फोड़ के बावजूद, जिसमें सूरत नगर निगम के अधिकारियों, पुलिस और बिल्डरों की मिलीभगत थी, अब तक कोई ठोस कारण सामने नहीं आया है और दोषियों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की गई है। इससे प्रभावित लोगों में भारी आक्रोश है। दूसरी ओर, यह बात सामने आई है कि बिल्डर के लोग, सत्ताधारी पार्टी भाजपा के कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर, उन्हें धमका रहे हैं और परेशान कर रहे हैं ताकि दो से तीन लाख रुपये में मामला सुलझाया जा सके और उनसे कागजात पर हस्ताक्षर करवाए जा सकें। यह सारा खेल प्रभावित लोगों को मौके पर ही पीटने का एक नाटक बनता जा रहा है।

मानसून की शुरुआत में बेघर हुए इन प्रभावित लोगों की मजबूरी का फायदा उठाते हुए, बिल्डरों का समूह और कुछ प्रभावशाली लोग इस पूरे घोटाले को छिपाने में जुट गए हैं। आरोप हैं कि गरीब परिवारों को डरा-धमकाकर एक विवादित

"गारंटी पत्र" पर हस्ताक्षर करने और अंगूठे के निशान लगाने के लिए मजबूर किया जा रहा है। इन आरोपों के अनुसार, इस क्षेत्र में सक्रिय और लगातार विवादों में घिरे भाजपा के अल्पसंख्यक मोर्चे के एक स्थानीय नेता के खास लोग हाल ही में इस मामले में शामिल हुए हैं।

ये दोनों व्यक्ति बिल्डर की ओर से बिचौलिए का काम कर रहे हैं और प्रभावित गरीब परिवारों को रात में धमका रहे हैं या उनके अकेलेपन का फायदा उठा रहे हैं कि अगर वे दिए गए कागजातों पर हस्ताक्षर नहीं करेंगे तो उन्हें भविष्य में एक भी रुपया नहीं मिलेगा और न ही उन्हें कोई आवास आवंटित किया जाएगा। यह भी संदेह है कि कुछ परिवार ऐसी खुली धमकियों और लगातार मानसिक दबाव से भयभीत होकर दबाव में आकर कागजातों पर हस्ताक्षर कर चुके हैं।

वायरल हो रहे इस वचनपत्र में लिखी बातों को पढ़कर कानूनी विशेषज्ञ भी हैरान हैं। इसका कारण यह है कि इसमें लिखा है, "हम सूरत नगर निगम के टीपी रोड, नासिर नगर स्थित नगर निगम की ज़मीन पर अवैध रूप से कब्जा किए हुए थे। चूंकि यह ज़मीन हमारी संपत्ति नहीं है, इसलिए हमने खुशी-खुशी और स्वेच्छा से यह निर्माण और कब्जा हटा दिया है और ज़मीन नगर निगम को सौंप दी है।"

इस प्रकार, यह पत्र, जो वास्तविकता के बिल्कुल विपरीत है, क्योंकि लोगों के घरों को जबरन ध्वस्त कर दिया गया (जिसका वीडियो भी मौजूद है) जबकि कागजों पर इसे "स्वेच्छा से खाली" दिखाने की एक घिनौनी योजना बनाई गई है। इस तरह, पीड़ितों के सभी कानूनी अधिकारों को छीनने के लिए एक पूरी व्यवस्था स्थापित की गई है। और इसके साथ ही, यह भी लिखा गया है कि इस स्थान को खाली करने के लिए हम पर किसी व्यक्ति या संस्था द्वारा कोई दबाव नहीं डाला गया है। और हम या हमारे सास-ससुर भविष्य में इस संबंध में कोई कानूनी शिकायत या अदालती मामला दर्ज नहीं करेंगे और यदि हम ऐसा करते हैं, तो यह गारंटी पत्र स्वतः ही अमान्य माना जाएगा।

इस प्रकार, कानून के शिकंजे से बचने के लिए, निर्माणकर्ताओं से जुड़े लोग पीड़ितों के खिलाफ कानूनी हथियार तैयार कर रहे हैं और प्रभावित लोगों के गले में फंदा डालकर अपना खेल पूरा कर रहे हैं। यह ध्यान देने योग्य है कि गरीबों का रक्षक कौन है?

AAP विधायक गोपाल इटालिया ने जिला शिकायत समिति की बैठक में दी उपस्थिति

▸▸ जूनागढ़ और विसावदर के किसानों को शून्य प्रतिशत ब्याज पर ऋण मिलता है, उसमें अनेक किसानों को रिबेट नहीं मिला है, इस मुद्दे पर प्रस्तुति की: गोपाल इटालिया

▸▸ जूनागढ़ के अनेक तालुकों की स्कूलों में कई पुस्तकें नहीं आई हैं: गोपाल इटालिया

▸▸ कलेक्टर के समक्ष सवाल किया कि पुस्तकों के बिना बच्चे पढ़ाई कैसे कर रहे हैं?: गोपाल इटालिया

▸▸ विसावदर के 14 गांवों में आरक्षित वन भूमि की प्रविष्टि हटाने के संबंध में प्रस्तुति की: गोपाल इटालिया

▸▸ कई गांवों को सेटलमेंट गांव माना जाता है, वहां ग्राम पंचायत स्थापित हो ऐसी प्रस्तुति की: गोपाल इटालिया

▸▸ जूनागढ़-भेसाण रोड में डायवर्जन के कारण मानसून में लोगों को परेशानी न हो, इस विषय पर चर्चा की: गोपाल इटालिया

▸▸ गांवों में समय पर गरीबों तक अनाज पहुंचे, इस विषय पर प्रस्तुति की: गोपाल इटालिया

▸▸ विसावदर के काछिया नाका से सासन तक के रास्ते को नया बनाया जाए, जब तक नया न बने तब तक वर्ष में दो बार उसका रखरखाव किया जाए, इस विषय पर चर्चा की: गोपाल इटालिया

▸▸ कालावड ग्राम पंचायत, सरसाई की आंगनवाड़ी और मोटी मोणपरी, करिया, जामका सहित अन्य गांवों की टंकियां तोड़ने के मुद्दे पर प्रस्तुति की: गोपाल इटालिया

▸▸ कुबा रावणी गांव का रजिस्टर तलाटी मंत्री ने वर्ष 2006 में गायब कर दिया था, जिसके कारण 20 वर्षों से गांव के लोग जमीन के मुद्दे पर परेशान हो रहे हैं, उस मुद्दे का आज समाधान आया है: गोपाल इटालिया

▸▸ आज की बैठक में अनेक मुद्दों पर सकारात्मक परिणाम मिले, इसके लिए जिला प्रशासन और सभी सरकारी कर्मचारियों का आभार: गोपाल इटालिया

अहमदाबाद/जूनागढ़/गुजरात: आम आदमी पार्टी के विसावदर विधायक गोपाल इटालिया ने बताया कि आज जूनागढ़ जिले के नव नियुक्त कलेक्टर की अध्यक्षता में जिला शिकायत निवारण बैठक आयोजित की गई थी। इस बैठक में मैंने जूनागढ़ और विसावदर क्षेत्र के किसानों की विभिन्न समस्याएं प्रस्तुत की थीं। विशेष रूप से किसानों को मिलने वाली रिबेट, अर्थात शून्य प्रतिशत ब्याज पर मिलने वाले ऋण का मुद्दा उठाया था। अनेक गांवों में किसानों को वर्ष 2022-23, 2023-24 और 2024-25 की रिबेट अभी तक नहीं मिली है। इस विषय पर विभिन्न बैंकों के अधिकारियों के समक्ष प्रस्तुति की गई थी। बैंक अधिकारियों ने जिन-जिन गांवों में किसानों को रिबेट नहीं मिली है, उन सभी फाइलों को स्वीकृति के लिए भेजने का आश्वासन दिया है। इसके अलावा जूनागढ़ जिले के अनेक तालुकों में विभिन्न विषयों की पाठ्यपुस्तकें अभी तक स्कूलों में नहीं पहुंची हैं। विशेष रूप से माध्यमिक विद्यालयों की पुस्तकें अभी तक नहीं मिली हैं। बालवाटिका और कक्षा 1 से 2 की पुस्तकें भी अनेक स्कूलों और तालुकों में उपलब्ध नहीं हैं। इस मुद्दे पर मैंने बैठक में कलेक्टर और शिक्षा विभाग के अधिकारियों से प्रश्न किया कि सरकार 'भार रहित शिक्षा' की बात करती है, लेकिन 'पुस्तक रहित शिक्षा' कैसे संभव है? स्कूल खुले हुए लगभग एक महीना हो गया है, तो विद्यार्थी क्या पढ़ रहे हैं और कैसे पढ़ रहे हैं? पुस्तक के बिना चल रही शिक्षा के इस गंभीर मुद्दे पर भी बैठक में चर्चा की गई थी। इसके अलावा विसावदर तालुका के अलग-अलग 14 गांवों, जिनमें पीयावा, मूडीयारावणी, जावलडी, जांभुडी, राजपरा सहित अनेक गांव शामिल हैं, वहां शाथणी और भूदान के अंतर्गत सरकार द्वारा किसानों को दी गई जमीनों में पिछली तारीख से 'आरक्षित वन भूमि' की प्रविष्टि दर्ज कर दी गई है। इस प्रविष्टि के कारण किसानों को अपनी जमीन पर ऋण सहित विभिन्न सरकारी योजनाओं का लाभ नहीं मिल रहा है। इसलिए इन जमीनों से 'आरक्षित वन भूमि' की प्रविष्टि हटाई जाए, इस संबंध में भी आज कलेक्टर के समक्ष प्रस्तुति की गई थी। गोपाल इटालिया ने आगे बताया कि हसनापुर गांव आजादी के बाद भी अब तक सेटलमेंट में है। हसनापुर, जांबुथाला, शिरवाणिया, सादियावाव और अन्य अनेक गांव आज भी सेटलमेंट गांव माने जाते हैं। इन सभी

गांवों में ग्राम पंचायत स्थापित हो और गांव के लोगों को उनके अधिकार मिलें, इस संबंध में मैंने सरकार में भी प्रस्तुति की थी, विधानसभा में भी प्रस्तुति की थी और आज की बैठक में भी प्रस्तुति करते हुए उसका सकारात्मक प्रतिसाद मिला है। जूनागढ़-भेसाण रोड जो बन रहा है, उसमें डायवर्जन का प्रश्न है। मानसून में लोगों को परेशानी न हो, इस विषय पर आज की बैठक में चर्चा की गई थी। सहकारी मंडली का जो महत्वपूर्ण मुद्दा है, उसमें इस बैठक में बहुत अच्छा और सकारात्मक परिणाम देखने को मिला है। छोड़वड़ी गांव के लगभग दस किसानों को 'नो ड्यूज' प्रमाणपत्र दिया गया है। वर्षों से किसानों के खातों से पैसे निकालकर उन पर बोझ डाला गया था। अब उन्हें बोझमुक्ति प्रमाणपत्र देने की शुरुआत हुई है। इस विषय पर मैं सरकारी तंत्र का आभार व्यक्त करता हूं। हालांकि इसमें बहुत विलंब हुआ है। राशन के अनाज के विषय में भी प्रस्तुति की गई है। कई बार अनाज बारहवीं, बीसवीं या पच्चीसवीं तारीख को गांवों में पहुंचता है, जो वास्तव में गलत बात है। समय पर अनाज गांव के दुकानदार तक पहुंचे और दुकानदार भी समय पर गरीब लोगों तक अनाज पहुंचाए, इस विषय पर भी आज प्रस्तुति की गई थी। विसावदर के काछिया नाका से सासन तक जो जंगल का रास्ता है, उस रास्ते का रिसर्फेसिंग करके नया बनाया जाए और नया रास्ता बनने तक वर्ष में दो बार उसका रखरखाव किया जाए, इस विषय पर भी आज की बैठक में चर्चा हुई थी। वन विभाग और आरएनपी के दोनों अधिकारियों ने इस विषय का सकारात्मक संज्ञान लिया है। कालावड को ग्राम पंचायत का दर्जा देने के संबंध में तथा मोटी मोणपरी, करिया, चामका और अन्य गांवों की पुरानी पानी की टंकियां तोड़ने के संबंध में भी आज चर्चा की गई थी। रावणीकुबा गांव के रेवेन्यू रिकॉर्ड में हकपत्रक नंबर-6 का पूरा रजिस्टर तलाटी मंत्री ने वर्ष 2006 में गायब कर दिया था, जला दिया था या फाड़ दिया था यह स्पष्ट नहीं है, लेकिन इसके कारण पिछले बीस वर्षों से गांव के लोग जमीन संबंधी समस्याओं में बहुत परेशान हो रहे थे। आज की बैठक में इस समस्या के समाधान की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। जो लगभग नौ सौ प्रविष्टियां गायब हो गई थीं, उनमें से लगभग पांच सौ प्रविष्टियां विसावदर के तालुका प्रशासन द्वारा खोज निकाली गई हैं। इस विषय पर भी मैं जिला और तालुका प्रशासन का आभार व्यक्त करता हूं। कुल मिलाकर अनेक समस्याओं के सकारात्मक परिणाम आज की इस बैठक में मिले हैं। इसके लिए मैं जूनागढ़ जिला प्रशासन और उसके सभी सरकारी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का आभार व्यक्त करता हूं।

मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके ने वडोदरा यार्ड रीमॉडलिंग का किया निरीक्षण

हाई स्पीड रेल स्टेशन को जोड़ेगा नया प्लेटफार्म, 22 डिब्बों की ट्रेनों के लिए प्लेटफार्म 4 & 5 का हो रहा विस्तार

पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके के नेतृत्व में वडोदरा स्टेशन पर व्यापक यार्ड रीमॉडलिंग एवं ट्रैक इंफ्रास्ट्रक्चर के आधुनिकीकरण का कार्य प्रगति पर है। मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके ने वडोदरा स्टेशन का दौरा कर इंफ्रा के इस महत्वपूर्ण कार्य का वरिष्ठ अधिकारिओं के साथ निरीक्षण किया।

श्री भडके ने बताया कि इस महत्वाकांक्षी परियोजना का उद्देश्य परिचालन संरक्षा में वृद्धि, लाइन एवं प्लेटफॉर्म क्षमता का विस्तार, ट्रेन संचालन दक्षता में सुधार तथा यात्रियों को बेहतर सुविधाएं प्रदान करना है। साथ ही, भविष्य की परिवहन आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए स्टेशन के बुनियादी ढांचे को और अधिक सुदृढ़ बनाया जा रहा है। यह आधारभूत संरचना विकास पहल भविष्य में बढ़ने वाले यातायात भार को संभालने की वडोदरा स्टेशन की क्षमता को मजबूत करेगी तथा लाखों रेल यात्रियों के लिए सुरक्षित, सुगम एवं कुशल यात्रा सुनिश्चित करेगी।

VDU आधारित प्रणाली से ट्रेन संचालन का आधुनिकीकरण

यार्ड रीमॉडलिंग परियोजना के अंतर्गत वडोदरा स्टेशन की वर्तमान पारंपरिक पैनल-आधारित प्रणाली को आधुनिक विजुअल डिस्प्ले यूनिट (VDU) आधारित प्रणाली से प्रतिस्थापित किया जा रहा है। यह नई प्रणाली ट्रेन संचालन की निगरानी एवं नियंत्रण को अधिक तेज, सुविधाजनक एवं विश्वसनीय बनाएगी। VDU प्रणाली कंप्यूटर स्क्रीन पर सिग्नलिंग एवं रूट संबंधी जानकारी को स्पष्ट एवं उपयोगकर्ता-अनुकूल स्वरूप में प्रदर्शित करती है, जिससे स्टेशन परिचालन कर्मचारियों को बेहतर दृश्यता, त्वरित रूट सेटिंग तथा शीघ्र निर्णय लेने में सहायता मिलेगी। यह प्रणाली मानवीय त्रुटियों की संभावना को कम करेगी, तकनीकी खामियों की पहचान को आसान बनाएगी तथा परिचालन संरक्षा एवं दक्षता में उल्लेखनीय सुधार लाएगी।

संरक्षा एवं विश्वसनीयता बढ़ाने हेतु डबल स्लिप डायमंड क्रॉसिंग को हटाया जाएगा

संरक्षा को और अधिक मजबूत करने तथा परिचालन को सरल बनाने के लिए मौजूदा डबल स्लिप डायमंड क्रॉसिंग को हटाया जाएगा। यह जटिल ट्रैक संरचना ट्रेनों को एक ही स्थान पर ट्रैक पार करने और मार्ग बदलने की सुविधा प्रदान करती है, लेकिन इसमें अनेक चलित घटक होते हैं, जिनके रखरखाव की आवश्यकता अधिक होती है तथा गति संबंधी प्रतिबंध भी लागू रहते हैं। इसके हटने से ट्रैक संरचना सरल होगी, विश्वसनीयता बढ़ेगी, रखरखाव की आवश्यकता कम होगी तथा स्टेशन यार्ड में ट्रेनों की आवाजाही अधिक सुरक्षित एवं सुगम बनेगी।

प्लेटफॉर्म संख्या 4 एवं 5 का विस्तार

प्लेटफॉर्म संख्या 4 एवं 5 की लंबाई बढ़ाकर इन्हें 22 एलएचबी कोचों वाली ट्रेनों के संचालन हेतु सक्षम बनाया जा रहा है। इस विस्तार से लंबी दूरी की ट्रेनों के सभी कोच प्लेटफॉर्म सीमा के भीतर रहेंगे, जिससे यात्रियों के चढ़ने एवं उतरने की प्रक्रिया अधिक सुरक्षित और सुविधाजनक होगी। साथ ही, भविष्य में बढ़ने वाली यात्री संख्या को ध्यान में रखते हुए लंबी ट्रेनों के संचालन में भी सुविधा मिलेगी।

प्लेटफॉर्म संख्या 5 एवं 6 की बेहतर कनेक्टिविटी

प्लेटफार्म नंबर 5 एवं 6 की रेल लाइन को सीधे मुख्य लाइन से जोड़ा जाएगा, जिससे अनुमत गति 10 किलोमीटर प्रति घंटा से बढ़कर 30 किलोमीटर प्रति घंटा हो जाएगी। इस सुधार से डाउन ट्रेनों की प्राप्ति में लगने वाला समय कम होगा तथा परिचालन दक्षता, ट्रेन हैंडलिंग क्षमता एवं समयपालन में सुधार आएगा।

लूप लाइन संख्या 04 एवं 05 पर गति में वृद्धि

लूप लाइन संख्या 04 एवं 05 पर अनुमत गति 10 किलोमीटर प्रति घंटा से बढ़ाकर 15 किलोमीटर प्रति घंटा की जाएगी।

पश्चिम रेलवे
अहमदाबाद मंडल

सामग्री आपूर्ति हेतु ई-निविदा

भारत के राष्ट्रपति की ओर से डीवाई. सीएमएम, साबरमती, पश्चिम रेलवे, सामग्री की आपूर्ति हेतु निम्नलिखित ई-निविदा आमंत्रित करते हैं। **निविदा संख्या: 71265493 सामग्री का संक्षिप्त विवरण:** सिलिंड्रिकल रोलर बेयरिंग **एफएजी पार्ट नं.:** NJ2224E.M1.C4 + NJP2224E.M1.C4 एसकेएफ पार्ट नं.: NJ2224MC4 + NJP2224MC4 कोयो पार्ट नं.: NJ2224FYC4 + NJP2224FYC4 एनटीएन पार्ट नं.: NJ2224MC4 + NJP2224MC4 टिमकेन पार्ट नं.: NJ2224 EMAC4 + NJP2224 EMAC4 **स्वीकृत निर्माता:** KOYO, SKF, FAG, NTN, TIMKEN **एफएजी इंडिया निर्मित बेयरिंग नं.:** NJ2224-E-XL-M1-QP-C4 + NJP2224-E-XL-M1-QP-C4 **मात्रा:** 186 सेट **ई-निविदा बंद होने की तिथि एवं समय:** 17.07.2026, 11:00 बजे **धरोहर राशि :** ₹1,09,740/- खरीद प्रतिबंधों एवं विस्तृत निविदा शर्तों से संबंधित जानकारी के लिए वेबसाइट **www.ireps.gov.in** देखें। मैनुअल ऑफर स्वीकार नहीं किए जाएंगे। **ADI 073**

हमें लाइक करें: facebook.com/WesternRly

डांग जिला समग्र देश में ट्विन-पिट शौचालय के मामले में देश का मॉडल बना

▸▸ पूर्णतः आदिवासी जनसंख्या वाला डांग जिला ग्रामीण स्वच्छता तथा फीकल स्लज मैनेजमेंट में देश को दिखा रहा है नई राह

▸▸ डांग जिले में 95 प्रतिशत परिवारों ने ट्विन-पिट शौचालय अपनाए

▸▸ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने वर्ष 2014 में खुले में शौचमुक्ति का लक्ष्य प्राप्त करने तथा गाँवों में ठोस व तरल कूड़ा प्रबंधन में सुधार लाने के लिए स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) की शुरुआत की थी

गांधीनगर, 20 जून : गुजरात के डांग जिले के आदिवासियों ने शायद स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) अंतर्गत ट्विन-पिट शौचालयों को लोकप्रिय बनाने वाले अक्षय कुमार और भूमि पेडनेकर के विज्ञापन नहीं देखे होंगे, लेकिन उन्होंने इस टेक्नोलॉजी को इतनी प्रभावी ढंग से अपनाया है कि आज डांग जिला ग्रामीण स्वच्छता के क्षेत्र में देश के लिए एक मॉडल बना है।

घने जंगलों, हरियाले पहाड़ों और वर्षा ऋतु के आह्लादक दृश्यों के लिए विख्यात डांग जिला आज स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) अंतर्गत फीकल स्लज मैनेजमेंट के महत्वपूर्ण घटक ट्विन-पिट शौचालयों के व्यापक स्वीकार के लिए भी पहचान प्राप्त कर रहा है।

जिला ग्रामीण विकास अभिकरण (डीआरडीए)-डांग के समन्वयक श्री विपुल परदेशी ने कहा, "डांग जिले में तीन तहसीलें और 310 गाँव हैं। डांग जिले की अनुमानित जनसंख्या 2.96 लाख है। जिले के कुल 58,966 परिवारों में से 51,613 परिवार ट्विन-पिट शौचालय अपना चुके हैं, जो जिले के कुल शौचालयों का लगभग 95 प्रतिशत है। फीकल स्लज मैनेजमेंट क्षेत्र में यह उल्लेखनीय उपलब्धि है। ये सब जन भागीदारी से संभव हुआ है। सरकार ट्विन-पिट शौचालय बनाने के लिए प्रत्येक परिवार को 12,000 रुपए की सहायता देती है।"

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने वर्ष 2014 में खुले में शौचमुक्ति का लक्ष्य प्राप्त करने और गाँवों में ठोस तथा तरल कूड़ा प्रबंधन में सुधार लाने के लिए स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) की शुरुआत की थी। उनके नेतृत्व में यह पहल स्वच्छता, महिलाओं की सुरक्षा और सर्वांगीण ग्रामीण स्वास्थ्य पर केन्द्रित एक व्यापक जन जागरण तथा व्यवहार परिवर्तन अभियान में विकसित हुई है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में राज्य सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों के प्रत्येक परिवार को शौचालय उपलब्ध कराने की व्यवस्था की है और स्वच्छता में देशभर में चोटी का स्थान प्राप्त किया है।

डांग जिले की सफलता ने राष्ट्रीय स्तर पर भी ध्यानाकर्षित किया

जनवरी 2026 में केन्द्रीय जल शक्ति मंत्रालय ने स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) अंतर्गत लागू किए गए विभिन्न फीकल स्लज मैनेजमेंट मॉडलों की समीक्षा के लिए राज्यों तथा केन्द्रशासित प्रदेशों के जिलों के साथ एक वर्चुअल संवाद आयोजित किया था। इस बैठक की अध्यक्षता केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री श्री सी. आर. पाटिल ने की थी। इस बैठक के दौरान विभिन्न राज्यों ने नवीन तथा व्यापक स्तर पर लागू किए जा सकने वाले स्वच्छता मॉडल प्रस्तुत किए थे। बैठक में सुदूरवर्ती आदिवासी क्षेत्रों में ट्विन-पिट शौचालयों को बड़े पैमाने पर अपनाने के लिए गुजरात के डांग जिले को विशेष उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया गया था।

श्री पाटिल ने भाग लेने वाले राज्यों की प्रशंसा करते हुए कहा था, "ऐसे स्वच्छता मॉडल केवल स्वच्छ भारत के विजन को साकार करने में ही सहायक नहीं बनते, अपितु टिकाऊ कूड़ा प्रबंधन के माध्यम से रोजगार के अवसर भी सृजित करते हैं।"

ट्विन-पिट शौचालय मानव मल को सुरक्षित रूप से विघटित कर पोषक तत्वों से भरपूर जैविक खाद में परिवर्तित करता है। ग्रामीण स्वच्छता ढाँचे को मजबूत बनाने के साथ यह टेक्नोलॉजी भूमिगत जल प्रदूषण तथा असुरक्षित कूड़ा निस्तारण के जोखिम को कम करके सार्वजनिक स्वास्थ्य एवं पर्यावरण की भी रक्षा करती है।

ट्विन-पिट शौचालय कैसे काम करता है ?

ट्विन-पिट शौचालय सामान्य शौचालय की तरह ही कार्य करता है, लेकिन इसकी विशेषता यह है कि यह मानव मल को सुरक्षित जैविक खाद में परिवर्तित करता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लूएचओ) द्वारा भी इस टेक्नोलॉजी को प्रभावी तथा टिकाऊ स्वच्छता समाधान के रूप में मान्यता दी गई है।

सीवर व्यवस्था तथा सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट से जुड़े परंपरागत शौचालयों की तुलना में ट्विन-पिट शौचालय घर के स्तर पर ही कूड़े का प्रबंधन करता है। मानव मल पहले गड्ढे में जाता है, जहाँ उसका प्राकृतिक रूप से विघटन होता है। पहला गड्ढा भर जाने के बाद मल प्रवाह को दूसरे गड्ढे में मोड़ दिया जाता है। तब तक पहले गड्ढे में मौजूद मल पूरी तरह विघटित होकर सुरक्षित और पोषक तत्वों से भरपूर खाद में परिवर्तित हो जाता है, जिसे सरलता से बाहर निकालकर खाद के रूप में उपयोग में लिया जा सकता है।

इस प्रकार के शौचालय महंगी सीवर व्यवस्था की आवश्यकता को समाप्त करते हैं और भूमि एवं जल स्रोतों को प्रदूषित किए बिना कचरे का सुरक्षित प्रबंधन करते हैं।

सस्ती और टिकाऊ टेक्नोलॉजी

स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) अंतर्गत व्यक्तिगत घरेलू शौचालयों के निर्माण के लिए सरकार 12,000 रुपए की सहायता प्रदान करती है और स्थल पर ही कूड़ा प्रबंधन के लिए ट्विन-पिट टेक्नोलॉजी को सक्रिय रूप से प्रोत्साहित करती है।

ट्विन-पिट शौचालय लागत की दृष्टि से सस्ते हैं और इनमें परंपरागत फ्लश शौचालयों की तुलना में कम पानी की जरूरत पड़ती है। इसलिए ये ग्रामीण क्षेत्रों के लिए अत्यंत अनुकूल होते हैं।

इस प्रणाली में सामान्यतः लगभग तीन फीट गहराई वाले दो गोलाकार गड्ढे आस-पास बनाए जाते हैं। गड्ढों की दीवारें मधुमक्खी के छत्ते (हनीकॉम्ब पैटर्न) के आकार की बनाई जाती हैं, जिससे तरल पदार्थ आसपास की मिट्टी में आसानी से शोषित हो सके, जबकि गड्ढे के तल में कोई लाइनिंग नहीं की जाती है। सामान्यतः सीमेंट मोर्टार से युक्त ईंटों का उपयोग किया जाता है, परंतु स्थानीय स्तर पर उपलब्ध पत्थर, लकड़ी के खंभे, कंक्रीट रिंग, पकी हुई मिट्टी या पुनः उपयोग किए गए ड्रमों का भी उपयोग हो सकता है।

अयोध्या के राम मंदिर के दान में हुई लूट के मुद्दे पर AAP प्रदेश प्रवक्ता हिमांशु ठक्कर का बयान

▸▸ किसानों के खेत, छात्रों के पेपर के बाद अब मंदिर का दान भी सुरक्षित नहीं है: हिमांशु ठक्कर AAP

▸▸ अयोध्या में लूट चल रही है, तब अंग्रेजों को भी शर्म आए ऐसा कृत्य सत्ताधारी पार्टी के लोग कर रहे हैं: हिमांशु ठक्कर AAP

▸▸ सोने-चांदी की लगभग 1200 ईंटें गायब हो गई थीं, करोड़ों की लूट की रकम की चर्चा हो रही है: हिमांशु ठक्कर AAP

▸▸ मंदिर में काम करने वाले लोगों के पास एक समय साइकिल भी नहीं थी, अब दस गाड़ियां आ गई हैं: हिमांशु ठक्कर AAP

▸▸ जिन लोगों के पास फूटी कौड़ी नहीं थी, उनके पास अब करोड़ों की जमीनें कहां से आ गईं?: हिमांशु ठक्कर AAP

▸▸ दान लूटने वालों को पता है कि ऊपर तक के लोगों का आशीर्वाद उनके साथ है: हिमांशु ठक्कर AAP

▸▸ पिछले आठ महीनों के CCTV फुटेज डिलीट कर दिए गए: हिमांशु ठक्कर AAP

अहमदाबाद/गुजरातः आम आदमी पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता हिमांशु ठक्कर ने वीडियो के माध्यम से कहा कि आज तो वित्तीय खाते सुरक्षित नहीं हैं, छात्रों के पेपर सुरक्षित नहीं हैं और मंदिरों में आने वाला दान भी सुरक्षित नहीं है। पिछले एक सप्ताह से सोशल मीडिया, न्यूज चैनलों और कुछ रामभक्त धर्माचार्यों तथा संतों द्वारा जो समाचार सामने आ रहे हैं, उन्हें देखकर वास्तव में हमारा हृदय द्रवित हो उठता है। *सोने-चांदी की लगभग 1200 ईंटें गायब हो गई थीं, करोड़ों की लूट की रकम की चर्चा हो रही है। जब सोमनाथ का ताला टूटा था तब मुगल थे और जब अनेक विद्यापीठों, छोटे-बड़े मंदिरों और तीर्थस्थलों को नुकसान पहुंचाया गया था तब अंग्रेज थे। लेकिन आज जब अयोध्या में अनियमितताओं और भ्रष्टाचार के आरोप लग रहे हैं, तब मुगल या अंग्रेज नहीं बल्कि सत्ताधारी पार्टी से जुड़े लोगों के नाम सामने आ रहे हैं। यह कोई छोटी घटना नहीं है। करोड़ों रामभक्तों का हृदय वास्तव में द्रवित हो उठता है। जो लोग भगवान श्रीराम के प्रति आस्था, समर्पण भाव और भक्ति भाव से हजारों किलोमीटर की यात्रा करके दर्शन के लिए पहुंचते हैं और अपनी क्षमता के अनुसार दान करते हैं, उनके लिए ऐसे समाचार अत्यंत दुखद हैं। मीडिया में अलग-अलग प्रकार की रिपोर्टें और करोड़ों रुपये के आंकड़े सामने आ रहे हैं। ट्रस्ट से जुड़े कुछ लोगों और उनके रिश्तेदारों द्वारा अनियमितताएं किए जाने के आरोप लगाए जा रहे हैं। ऐसे लोग, जिनके पास कभी साइकिल खरीदने के भी पैसे नहीं थे, वे आज कई गाड़ियों के मालिक बन गए हैं। जिनके पास एक दुकान भी नहीं थी, वे बड़ी-बड़ी इमारतों के मालिक बन गए हैं। जिनके पास कुछ भी नहीं था, वे करोड़ों की जमीनों के मालिक बन गए हैं। पूरी व्यवस्था कैसे काम करती है, इसे समझने की जरूरत है। इस प्रकार की घटनाएं बार-बार क्यों हो रही हैं, इस पर हर रामभक्त को विचार करना होगा। इन लोगों को भगवान श्रीराम का भी डर नहीं है और सत्ता में बैठे शासकों का भी डर नहीं है। क्योंकि उन्हें लगता है कि ऊपर तक उनका आशीर्वाद है और उनका कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता। कोई छोटा-मोटा कर्मचारी निलंबित हो जाएगा, कोई जांच समिति या SIT का गठन हो जाएगा, लेकिन ऊपर से नीचे तक यदि जवाबदेही तय नहीं होगी तो ऐसी घटनाएं फिर होती रहेंगी। मजे की बात तो यह है कि ऐसे समाचार भी सामने आए हैं कि पिछले आठ महीनों के CCTV फुटेज डिलीट या डिस्टर्ब कर दिए गए हैं। AAP प्रवक्ता हिमांशु ठक्कर ने आगे कहा कि इतनी बड़ी घटना में CCTV की पूरी रिकॉर्डिंग गायब हो जाए, तो क्या किसी के सहयोग के बिना यह संभव है? कुछ समय तक यह मुद्दा चर्चा में रहेगा, फिर धीरे-धीरे सब शांत हो जाएगा। लेकिन सबसे बड़ा दुख तो रामभक्तों की भावनाओं के साथ हुआ खिलवाड़ है। हाल ही में ऐसे समाचार भी आए हैं कि दान में उल्लेखनीय कमी आई है। लेकिन सवाल यह है कि सच्चा दान क्या है? दान की पवित्रता कैसे बनाए रखी जा सकती है? शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों में करोड़ों रुपये का दान उपयोग किया जाए तो उसका लाभ समाज को मिलता है। किसी गरीब बच्चे की स्कूल या कॉलेज की फीस भर दी जाए, किसी जरूरतमंद को उपचार मिल जाए, तो शायद भगवान श्रीराम अधिक प्रसन्न होंगे। मैं सभी रामभक्तों से अनुरोध करता हूं कि इस देश की संस्कृति हमारी संस्कृति है। यदि मंदिरों में आने वाला दान भी सुरक्षित न रहे, तो लोगों की आस्था पर असर पड़ता है। मंदिरों में बढ़ते VIP कल्चर और ऐसी घटनाओं पर सामूहिक रूप से विचार करने की आवश्यकता है। सरकार के पास अपने संसाधनों की सुरक्षा करने की भी क्षमता नहीं है। कई बार सरकारी तंत्र की लापरवाही के मामले सामने आते हैं। तो फिर मंदिरों के प्रबंधन में सरकार की भूमिका कितनी और कैसी होनी चाहिए, इस पर भी चर्चा होनी चाहिए। इस देश में अनेक मठ, पीठ, संत और शंकराचार्य परंपराएं हैं। क्या सनातन परंपरा के अग्रणियों के साथ बैठकर ऐसी व्यवस्था नहीं बनाई जा सकती कि मंदिरों में एक निश्चित राशि से अधिक आय होने पर उसका एक हिस्सा शिक्षा, स्वास्थ्य और स्थानीय विकास के लिए उपयोग किया जाए? समय आ गया है कि हम इन मुद्दों पर गंभीरता से विचार करें। भगवान श्रीराम सभी को सद्बुद्धि दें। "वसुधैव कुटुम्बकम्" और "विद्या धनं सर्वधन प्रधानम्" जैसे हमारी संस्कृति के मूल्यों को फिर से जीवंत करने की आवश्यकता है। आज स्थिति ऐसी बन गई है कि लोग मंदिरों के दान पर भी सवाल उठाने लगे हैं। इस दुर्भाग्यपूर्ण मानसिकता और परिस्थिति पर निश्चित रूप से विचार करना होगा।

डॉल्फिन संरक्षण में गुजरात का योगदान महत्वपूर्ण

राज्य के समुद्र तटीय क्षेत्र में लगभग 680 से अधिक डॉल्फिन की उपस्थिति : वन एवं पर्यावरण मंत्री श्री अर्जुन मोढवाडिया

गांधीनगर : वन एवं पर्यावरण मंत्री श्री अर्जुन मोढवाडिया ने कहा है कि वन्यजीवों के साथ-साथ सबसे सुंदर एवं आकर्षक जलचर जीव 'डॉल्फिन' के संरक्षण-संवर्धन में गुजरात ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में जलचर एवं वन्यजीव संरक्षण तथा संवर्धन के विशेष प्रयासों के परिणामस्वरूप वर्ष 2025 की अंतिम गणना के अनुसार गुजरात के 4,087 वर्ग किलोमीटर में फैले समुद्री क्षेत्र में लगभग 680 से अधिक डॉल्फिन दर्ज हुई हैं। वहीं जलचर एवं वन्यजीव पर्यटन क्षेत्र में भी गुजरात ने लंबी छलांग लगाई है। गुजरात के प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों शिवराजपुर तथा पोशित्रा का समुद्र तट डॉल्फिन के लिए 'बेस्ट स्पॉट' के रूप में भी जाना जाता है। यहाँ पानी बहुत ही स्वच्छ होने के कारण डॉल्फिन सरलता से दिखाई दे जाती हैं।

श्री मोढवाडिया ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के सीधे मार्गदर्शन में गुजरात में वन विभाग ने पिछले 12 वर्षों में समुद्र तट पर मैंग्रोव के साथ-साथ जलचर जीवों के संरक्षण तथा उनके आवास-विकास के लिए अनेक प्रकार के संयुक्त प्रयास शुरू किए हैं। कच्छ की खाड़ी के दक्षिणी भाग में स्थित मरीन नेशनल पार्क तथा मरीन सैंक्चुरी के ओखा से नवलखी तक फैले 1,384 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में सर्वाधिक 498 डॉल्फिन होने की संभावना है, जबकि कच्छ की खाड़ी के उत्तरी भाग में कच्छ वृत्त अंतर्गत 1,821 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में 168, भावनगर के 494 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में 10 तथा मोरबी के 388 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में 4 डॉल्फिन देखी गई हैं। इस

प्रकार; कच्छ की खाड़ी में स्थित भारत का यह प्रथम समुद्री राष्ट्रीय उद्यान डॉल्फिन का मुख्य घर है।

उन्होंने कहा, "स्वस्थ इकोसिस्टम के लिए डॉल्फिन बहुत ही महत्वपूर्ण जलचर प्राणी है। समुद्री स्तनधारी प्राणियों के कुछ शीर्ष शिकारी खाद्य श्रृंखला में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और समुद्री इकोसिस्टम में संतुलन सुनिश्चित करने में भी सहायता करते हैं। इन डॉल्फिनों को बचाने में कच्छ से भावनगर तक समुद्र में मछली पकड़ने का कार्य करने वाले मछुआरे भाइयों का योगदान भी उतना ही महत्वपूर्ण है। इन सर्वग्राही प्रयासों के परिणामस्वरूप गुजरात के समुद्र तट पर दिखाई देने वाली डॉल्फिन देश-विदेश के पर्यटकों के लिए नया आकर्षण केन्द्र बनी हैं।" उन्होंने जोड़ा कि डॉल्फिन लुप्तप्राय प्रजातियों में शामिल होने के कारण उनका शिकार करना या उन्हें नुकसान पहुँचाना गैर-जमानती अपराध है।

गुजरात में दिखाई देने वालीं डॉल्फिन की विशेषताएँ

गुजरात के समुद्री क्षेत्र में मुख्यतः इंडो-पैसिफिक हम्पबैक डॉल्फिन तथा बॉटलनोज डॉल्फिन; इन दो प्रकार की डॉल्फिन सबसे अधिक दिखाई देती हैं। हम्पबैक डॉल्फिन अधिकतर अरब सागर में पाई जाती हैं। इसे इसकी विशिष्ट कूबड़ और विस्तारित डॉर्सल फिन अर्थात् पूँछ से पहचाना जा सकता है। डॉल्फिन अपने मैत्रीपूर्ण एवं जिज्ञासु स्वभाव के लिए जानी जाती है। डॉल्फिन कई बार लहरों में उछलती-कूदती और खेलती हुई दिखाई देती है, जो पर्यटकों को अपने एक्रोबैटिक प्रदर्शन से आनंदित कर देती है। इसका शरीर आकर्षक तथा इसके मुँह का आकार 'बोतल' जैसा होने के कारण इसे आसानी से पहचाना जा सकता है। डॉल्फिन का मुख्य भोजन मछलियाँ, केकड़े और झींगे होने के कारण यह समुद्र तटों और नदीमुखों के पास दिखाई देती है। हम्पबैक डॉल्फिन सामान्यतः 2.5 से 3.2 मीटर लंबी होती है और इसका वजन 150 से 250 किलोग्राम तक हो सकता है।

इसके अतिरिक्त; मछलियों की तरह डॉल्फिन के गलफड़े नहीं होते हैं। वह स्तनधारी प्राणी होने के कारण फेफड़ों से श्वास लेती है। इसलिए वह हर कुछ मिनट में पानी की सतह पर सिर बाहर निकालकर साँस लेने के लिए आती है। यह दृश्य पर्यटकों के लिए रोमांचक अनुभव बन जाता है।

यहाँ उल्लेखनीय है कि भारत का राष्ट्रीय जलचर प्राणी 'गंगा डॉल्फिन' है, जो पवित्र गंगा नदी की शुद्धता दर्शाता है। भारत सरकार ने 5 अक्टूबर 2009 को डॉल्फिन को भारत का 'राष्ट्रीय जलचर प्राणी' घोषित किया था। साथ ही; डॉल्फिन 'मानव मित्र जलचर प्राणी' के रूप में जानी जाती है तथा अपने बौद्धिक-मनोरंजक स्वभाव के लिए लोकप्रिय है।

गुजरात सरकार

स्वस्थ जीवन के लिए योग

Yoga for Healthy Ageing

12वाँ अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 2026

21 जून 2026 | रविवार सुबह 6:00 बजे से 8:00 बजे तक

स्थान:- सेठ एल.एच. साइंस कॉलेज, मानसा

गरिमामय उपस्थिति

श्री भूपेन्द्रभाई पटेल

माननीय मुख्यमंत्री, गुजरात

विशेष उपस्थिति

श्री हर्ष संघवी

माननीय उपमुख्यमंत्री, गुजरात

"12वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर,
आइए योग को अपनी जीवनशैली बनाएँ और
हर उम्र में स्वस्थ, सक्रिय तथा ऊर्जावान रहें।"

- हर्ष संघवी
उपमुख्यमंत्री, गुजरात